Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

आमोक्खाए परिव्वएज्जासि।

पुरुष! तू मोक्ष प्राप्ति तक चलता चल।

• नई दिल्ली • वर्ष 24 • अंक 3 • 24 - 30 अक्टूबर, 2022 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 22-10-2022 • पेज : 16 • ₹ 10

अष्टम आचार्य पूज्य कालूगणी अभिवंदना सप्ताह का शुभारंभ

आचार्य मघवागणी का सौभाग्य था कि उन्हें कालूगणी जैसा शिष्य मिला : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, १७ अक्टूबर, २०२२

कालूगणी अभिवंदना सप्ताह की शुरुआत। पूज्य कालूगणी के परंपर पट्टधर आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र में कहा गया है कि आदमी जीवन जीता है और एक जीवन के बाद संसारी अवस्था में दूसरा जन्म भी प्राप्त हो जाता है। अगले जीवन का निर्धारण वर्तमान जीवन में हो जाता है।

भगवती सूत्र में प्रश्न किया गया कि भंते! आयुष्य का बंध कितने प्रकार का प्रज्ञप्त है? उत्तर दिया गया आयुष्य का बंध छः प्रकार का प्रज्ञप्त है–(१) जाति नाम, यानी इंद्रियों के आधार पर एक इंद्रिय से लेकर पाँच इंद्रिय जाति वाले जीव। (२) गति नाम–चारों गति का निर्धारण। (३) स्थिति नाम। (४) अवगाहना नाम। (५) प्रदेश नाम। (६) अनुभाग नाम। ये छः प्रकार आयुष्य बंध के हैं। इनके बंध के बाद जीव आगे जन्म लेता है। यह सारा कर्म बंध के आधार पर होता है। एक दिन आयुष्य पूरा भी हो जाता है।

परमपूज्य मघवागणी के शिष्य परमपूज्य कालूगणी थे। मघवागणी द्वारा दीक्षित शिक्षित थे। छापर चतुर्मास स्थल पूज्य कालूगणी की जन्मभूमि है।

कालूगणी अभिवंदना सप्ताह का आज प्रथम दिन है। आचार्यों का मानो भाग्य ही होता है कि उन्हें अच्छे शिष्यों की प्राप्ति होती है। मघवागणी को भी कालूगणी जैसे शिष्य मिले। कोई-कोई पुत्र पिता से भी आगे बढ़ जाने वाला हो जाता है। पिता के लिए भी यह गौरव की बात है। जैसे घड़े से पैदा हुए अत्र सत्यस्थ ऋषि समुद्र के जल को पी गए। गुरु के सामने तो शिष्य शिष्य ही रहता है।

पूज्य कालूगणी मघवागणी की प्रतिकृति थे। पर थोड़े से भिन्न रूप में भी रहे हैं। कालूगणी ऐसे आचार्य थे, जिन्होंने तीन-तीन आचार्यों के शासनकाल में अपना मुनित्व व्यतीत किया। पूज्य डालगणी भी तीन आचार्यों के शासन में मुनि रूप में रहे थे, बाकी और आचार्य नहीं।

कालूगणी के जीवन का एक विभाग है, उनका गार्हस्थ्य जीवन। दूसरा विभाग है–मघवागणी और कालूगणी, तीसरा विभाग है–माणकगणी और कालूगणी और चौथा विभाग है–डालगणी और कालूगणी, पाँचवाँ विभाग उनके स्वयं के जीवन का है। कालूगणी संस्कृत भाषा के वेत्ता थे, उन्होंने संस्कृत भाषा को आत्मसात् करने का प्रयास किया था। उनके शिष्य भी संस्कृत भाषा में आगे बढ़े थे। हम मघवागणी और कालूगणी से प्रेरणा का आदान करते रहें, आगे बढ़ते रहें।

मुनि पृथ्वीराज जी 'जसोल', साध्वी विमलप्रज्ञाश्री जी, साध्वी सुषमा कुमारी जी, मुनि विकास कुमार जी ने अपने श्रद्धा भाव पूज्य कालूगणी के प्रति अभिव्यक्त किए। ज्ञानशाला, छापर ने भी अपनी प्रस्तुति दी। अलका बैद, कुसुम बैद ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

दोषों की शुद्धि के लिए प्रतिक्रमण रूपी स्नान आवश्यक : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, १३ अक्टूबर, २०२२

परम पावन, परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण जी ने भगवती सूत्र आगम की विवेचना करते हुए फरमाया कि भगवान महावीर विराजमान थे, उनके पास अन्य परंपरा के स्थविर भगवंत आते हैं। अन्य परंपरा भगवान पार्श्व की चल रही थी। उन स्थविरों ने प्रश्न पूछा कि यह लोक है वह असंख्येय प्रदेशात्मक है। असंख्येय प्रदेशात्मक में अनंत दिन-रात उत्पन्न हो गए हैं, होते हैं, होंगे, यह बात ऐसे ही है क्या?

भगवान ने उत्तर दिया–हाँ होता है। लोक सीमित है, पर दिन-रात अनंत हुए हैं, होंगे। भगवान पार्श्व ने लोक को शाश्वत बताया है, अनादि अनंत बताया है। उन्होंने भी तो लोक को सीमित ही बताया है। भगवान से प्रभावित होकर वंदन-नमस्कार कर स्थिविर बोले भंते! अब हम आपसे पंच महाव्रत रूप धर्म को सप्रतिक्रमण स्वीकार कर विहार करना चाहते हैं।

भगवान ने उसकी स्वीकृति दे दी। पंच महाव्रत रूप धर्म स्वीकार कर वे अंत समय में कई मुक्ति को प्राप्त हो गए। उनमें से कुछ देव लोकों में चले गए। इस असंख्येय लोक में अनंत जीव रहते हैं। एक जीव के असंख्य-असंख्य प्रदेश होते हैं। पुद्गल तो कितने हैं, जो इस सीमित लोक में स्थापित हो जाते हैं। ४५ लाख योजन सिद्ध क्षेत्र में अनंत सिद्ध विराजमान हैं।

भगवान पार्श्व की परंपरा में रोज प्रतिक्रमण आवश्यक नहीं था पर भगवान महावीर की परंपरा में रोज प्रतिक्रमण होता था। चारित्रात्माओं के लिए दोनों समय प्रतिक्रमण करना अनिवार्य है। श्रावक प्रतिक्रमण भी होता है। इससे स्वाध्याय हो जाता है, प्रेरणा मिल जाती है और दोषों की शुद्धि हो सकती है। प्रतिक्रमण एक प्रकार का स्नान होता है, इसमें प्रमाद न हो। यह हमारे लिए हितकर, क्षेमंकर, शिवकर, शिवंकरण हो सकता है।

प्रतिक्रमण का अर्थ है कि अपने स्थान से दूसरे स्थान में प्रमाद से जाना हो गया, वापस वहीं लौटना यह प्रतिक्रमण होता है। एक परंपरा के साधु दूसरी परंपरा के साधु को वंदन-नमस्कार करें, यह जरूरी नहीं। अपनी-अपनी मान्यता होती है। अपनी-अपनी व्यवस्था का यथोचित् सम्मान रखना चाहिए। भगवान महावीर ने अर्हत पार्श्व की बात का उल्लेख किया है, कहीं पर भी उनकी बात का खंडन नहीं किया है। उनकी बात को उदित किया है।

पूज्यप्रवर ने कालू यशोविलास का विवेचन किया। पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

कौशल बैद (कनाड़ा) को मिला प्रज्ञा पुरस्कार

जैन विश्व भारती द्वारा प्रज्ञा पुरस्कार सम्मान समारोह का आयोजन पूज्यप्रवर की सन्निधि में हुआ। सलिल लोढ़ा ने वर्ष-२०२१ के प्रज्ञा पुरस्कार डॉ० कौशल बैद, कनाड़ा को प्रदान करने की घोषणा की। पुरस्कार प्रदाता परिवार की ओर से उम्मेदसिंह दुगड़ ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। डॉ० कौशल बैद ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की।

पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया कि प्रज्ञा एक अच्छे अर्थ से युक्त शब्द है। प्रज्ञा ज्ञानावरणीय कर्म का क्षयोपशम होने से निष्पन्न होने वाली ज्ञान चेतना है। प्रज्ञा का सदुपयोग होता रहे। वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में जो कार्य करना होता है, अन्वेषण की गहराई में जाना होता है। वो इतना ज्ञान की गहराई में चला जाता है कि कुछ अंशों में साधु जैसा हो जाता है। जिनमें प्रज्ञा है, वो अपनी प्रज्ञा का अच्छा उपयोग करते रहें। साथ में अध्यात्म चेतना भी हो। छोटी अवस्था पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया कि प्रज्ञा एक अच्छे अर्थ से युक्त शब्द है। प्रज्ञा ज्ञानावरणीय कर्म का क्षयोपशम होने से निष्पन्न होने वाली ज्ञान चेतना है। प्रज्ञा का सदुपयोग होता रहे। वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में जो कार्य करना होता है, अन्वेषण की गहराई में जाना होता है। वो इतना ज्ञान की गहराई में चला जाता है कि कुछ अंशों में साधु जैसा हो जाता है। जिनमें प्रज्ञा है, वो अपनी प्रज्ञा का अच्छा उपयोग करते रहें। साथ में अध्यात्म चेतना भी हो। छोटी अवस्था में प्रज्ञा का विकास होना, तत्त्व की गहराई में पैठना अच्छी बात है। विज्ञान की खोज एक सत्य का कार्य है। अध्यात्म की साधना में भी सत्य उभरकर सामने आता है। दोनों का लक्ष्य अलग हो सकता है। यह प्रज्ञा पुरस्कार की चेतना और अध्यात्म की चेतना में विकास कराने वाला हो।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
24 - 30 अक्टूबर, 2022

✦ एक-दो घंटे मौन करना भी अच्छा है। किंतु सबसे अच्छा है अनावश्यक न बोलना।

—आचार्यश्री महाश्रमण

व्यवहारिक काल के आधार पर कर्मस्थिति-भवस्थिति जान सकते हैं: आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, १२ अक्टूबर, २०२२

तेरापंथ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र में प्रश्न किया गया कि मनुष्य लोक की तरह समय का मापन नरक में हो सकता है क्या? कहा गया कि यह अर्थ संगत नहीं है। क्योंकि मनुष्य लोक से बाहर ऐसी व्यवस्था नहीं है।

हमारी सृष्टि में दो प्रकार के क्षेत्र हैं—समय क्षेत्र और समयातीत क्षेत्र। समय क्षेत्र या मनुष्य क्षेत्र अढ़ाई द्वीप कहलाता है। नरक लोक, देवलोक और अढ़ाई द्वीप के बाहर के क्षेत्र समयातीत क्षेत्र है। वहाँ समय का प्रभाव नहीं होता। अढ़ाई द्वीप के बाहर सूर्य-चंद्रमा स्थिर है। मनुष्य लोक के आधार पर ही नरक-देवगति आदि की आयुष्य कालगणना की जाती है।

काल दो प्रकार का होता है—नैश्चयिक और व्यावहारिक। नैश्चयिक का लक्षण है वर्तना। आवलिका, वर्ष आदि व्यावहारिक काल है। इस काल के चक्र में कितने लोग आए और चले गए। व्यावहारिक काल के आधार पर ही हम कर्मस्थिति-भवस्थिति को जान सकते हैं। समय तो बीतता है।

आज कार्तिक कृष्णा तृतीया हमारे छठे आचार्य माणकगणी का महाप्रयाण दिवस है। माणकगणी के शासन में धर्मसंघ को लगभग पाँच वर्ष से भी कम समय में रहने का अवसर मिला। आचार्यश्री माणकगणी और आचार्यश्री तुलसी में समानता है कि दोनों का युवाचार्य काल ३ दिन का ही रहा। माणकगणी धर्मसंघ में कुछ नवीनता लाना चाहते थे, पर काल का प्रभाव से वो कार्य नहीं कर सके। आचार्य तुलसी ने तो धर्मसंघ में नवीनता ला दी। मैं उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि इस दुनिया में अच्छाई और बुराई दोनों का स्थान है। पर साधारणतया बुराई की तरफ आकर्षण रहता है। सम्यक् दृष्टि के लिए आवश्यक है सही दृष्टिकोण का निर्माण होना। विषयों में मूर्च्छा सम्यक्दृष्टि के लिए बाधक तत्त्व है। सम्यक्त्व का दूसरा लक्षण है—संवेग। यानी मोक्ष प्राप्त करने की उत्कंठा। सम्यक् व्यक्ति सच्चाई को जानता है कि जन्म, जरा, रोग

और मृत्यु दुःख है। संसार दुःख बहुल है। वो संसार से मुक्त होना चाहता है।

पूज्यप्रवर ने कालू यशोविलास का विवेचन किया। पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि तीर्थंकर मोक्ष का मार्ग बताने वाले हैं, पर चलना हमें ही पड़ेगा।

धर्म की साधना करने का साधन है शरीर : आचार्यश्री महाश्रमण

करुणानिधान करुणा बरसाते हुए

ताल छापर, १४ अक्टूबर, २०२२

महामनीषी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र में प्रश्नोत्तर के माध्यम से बताया गया है कि करण चार प्रकार के होते हैं—मन, वचन, काय और कर्म करण। करण शब्द हमसे बहुत परिचित भी है। करण यानि करना, कराना या अनुमोदन करना। योग यानि मन, वचन और काय।

यहाँ भगवती सूत्र में मन, वचन, काय को करण कहा गया है। करण शब्द का शाब्दिक अर्थ है—साधन। जिसके द्वारा कुछ किया जाए। कार्य की सिद्धि में जो सहायक साधन होता है, वह करण कहलाता है। करण का अर्थ जीव वीर्य भी कहा गया है। योग, करण प्रवृत्ति के साधन हैं। इनके द्वारा हम क्या करते हैं, वो विशेष महत्त्वपूर्ण है।

मन से चिंतन स्मृति और कल्पना की जा सकती है। असत् से हम सत् की ओर आगे बढ़ें। अचिंतन की दिशा में भी हमारी गति हो। चिंता नहीं चिंतन करो। चिंता और चिता दो शब्द हैं। दोनों में सिर्फ एक बिंदु का फर्क है, चिता तो निर्जीव को जलाती है, पर चिंता तो सजीव आदमी को जला देती है। व्यक्ति शोक की अग्नि में जल जाता है।

अच्छे संकल्पों वाला मन हो। वाणी भी हमारा विचार संप्रेषण का साधन है। आदमी झूठ और कपट वचन न बोले। शरीर से भी स्व-पर कल्याण सेवा की जा सकती है। धर्म की साधना का साधन भी शरीर बन सकता है। कर्मवाद के संदर्भ में आठ करणों की बात आती है। कर्मों की दस अवस्थाएँ हैं, उनमें सत्ता और उदय को करण नहीं कहा जाता है। सत्ता-उदय में हमारा पुरुषार्थ नहीं होता है।

मन, वचन और काय ये प्रवृत्ति के तीन साधन हैं, ये पाप करण न बनें। सत् शुभ करण रहे। शुभकरण दस्साणी गुरुदेव तुलसी के अंतरंग श्रावक थे।

पूज्यप्रवर ने कालू यशोविलास का सुंदर विवेचन किया। १७ अक्टूबर से २३ अक्टूबर तक पूज्यप्रवर द्वारा घोषित कालूगणी अभिवंदना सप्ताह का आयोजन होने जा रहा है। इसके अलग-अलग विषय रखे गए हैं। पूज्यप्रवर ने मुमुक्षु मुदित की दीक्षा ८ दिसंबर को सिरियारी में प्रदान कराने की घोषणा करवाई। मुमुक्षु मुदित व मुमुक्षु शुभम को साधु प्रतिक्रमण सीखने की आज्ञा पूज्यप्रवर ने प्रदान करवाई। पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

आचार्यश्री तुलसी के १०६वें जन्म दिवस पर

युगप्रधान के प्रेरणास्रोत - आचार्यश्री तुलसी

❐ डॉ. मुनि मदन कुमार ❐

अणुव्रत युगधर्म है, मानव मात्र को संयम की ओर आकृष्ट करने की इसमें शक्ति है। अणुव्रत का उद्‌बोधन है—संयम ही जीवन है। इसमें जीवन का दर्शन समाहित है। संयम के बिना शांति और शांति के बिना सुख की कल्पना ही दुरूह है। व्यक्ति शांति से लेकर विश्व शांति का मूलाधार संयम है। पदार्थ की प्रचुरता के बावजूद मनुष्य अशांति भोग रहा है, तब यह प्रश्न स्वाभाविक है—क्यों? उत्तर स्पष्ट है कि शांति का संबंध वैभव और विलासिता से नहीं, किंतु संयम से है। अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से इस सच्चाई को उजागर करने का सार्थक श्रम किया। उन्होंने खूब देशाटन किया, खूब साहित्य लिखा, खूब जनसंपर्क किया और खूब प्रवचन कर जनता-जनार्दन को आलोकमय बनाया। वे इस धर्म-परायण देश के पहले धर्मगुरु थे जिन्होंने उपासना को गौण कर आचार-शुद्धि का बिगुल बजाया। संप्रदायविहीन धर्म की कल्पना कर नैतिकताविहीन धर्म की प्रासंगिकता पर प्रश्नचिह्न लगाया। उन्होंने कहा जो नैतिक है वही धार्मिक है तथा जो नैतिक नहीं है वह धार्मिक भी नहीं है। इस तरह धर्म के साथ नैतिकता को जोड़कर उन्होंने धर्म को युगीन और वास्तविक रूप प्रदान किया।

अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से आचार्यश्री तुलसी मानव धर्म के महान व्याख्याकार बने। उनका चिंतन और दृष्टिकोण सांप्रदायिक संकीर्णता से सर्वथा मुक्त था। अतः वे सार्वभौम धर्म के प्रणेता बनें। व्यापक दृष्टिकोण के कारण वे मानवतावादी धर्माचार्य के रूप में प्रख्यात हुए। उन्होंने अपने परिचय में कहा—"मैं सबसे पहले मानव हूँ, उसके बाद धार्मिक हूँ और तद्‌नंतर धर्माचार्य हूँ।" उन्होंने अपने संदेशामृत में अध्यात्म और नैतिकता के विकास पर सर्वाधिक बल दिया। उनका स्पष्ट उद्‌घोष था कि जीवन में सुख-शांति के लिए नीति मार्ग का अनुसरण करो। अनीति से अर्जित धन और पदार्थ सुखदायी नहीं बनेगा। वे जनता के जीवन-परिष्कार के लिए कहते थे—"मुझे वोट नहीं चाहिए, मुझे नोट नहीं चाहिए मुझे तुम्हारे जीवन की खोट चाहिए।" जीवन की खोट माँगने वाले वे विलक्षण संत थे। अपने ओजस्वी विचारों से उन्होंने लाखों लोगों के हृदय पर शासन किया। उनकी वाणी और व्यक्तित्व में चमत्कार था और उनकी स्वल्प सन्निधि पाकर ही भक्त-अभक्त चमत्कृत हो जाते थे। अणुव्रत आंदोलन उनकी सबसे बड़ी देन कही जा सकती है। एक संप्रदाय के आचार्य द्वारा असांप्रदायिक धर्म का प्रवर्तन अद्‌भुत घटना कही जा सकती है।

राष्ट्रऋषि आचार्यश्री तुलसी २२ वर्ष की वय में तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्य बन गए, यह एक आश्चर्य है किंतु इससे भी बड़ा आश्चर्य यह है कि ५८ वर्षों तक तेरापंथ पर शासन करने के पश्चात् आचार्य पद का विसर्जन कर दिया। उन्होंने सोचा कि मैंने निर्विशेषण धर्म (मानव धर्म) का प्रवर्तन किया तो मैं स्वयं निर्विशेषण क्यों न बन जाऊँ? कितना उदात्त था उनका चिंतन और क्रियान्वयन? सचमुच वे नैतिक मूल्यों के प्रतिष्ठापक और महामानव थे। वे दृष्टिसंपन्न और गुणग्राही थे। विरोध को विनोद समझने वाले शलाका पुरुष थे। वे सत्यं, शिवं और सौंदर्य के संगम पुरुष थे। उनका मुखमंडल प्रसन्नता का निकेतन था। उनके अंतःकरण में वात्सल्य और करुणा का सागर लहराता था तथा वाणी अमृत के निर्झर की तरह आनंददायी थी। उनका संपूर्ण जीवन अप्रमत्तता और परोपकार-परायणता का प्रवर निदर्शन था। वे जन-जन के पूजनीय और प्रेरणास्रोत थे।

युगद्रष्टा आचार्यश्री तुलसी विक्रम संवत् २०५४ आषाढ़ कृष्णा तृतीया को इस संसार से अदृश्य हो गए, किंतु फिर भी वे लाखों लोगों के हृदय में बसे हुए हैं। उनकी पावन स्मृतियाँ मन को पुलकन से भरने वाली हैं। उनकी मनमोहक मुद्रा और चुंबकीय व्यक्तित्व सदा मन को आह्लादित करता है। उनकी यह सबसे बड़ी विशेषता थी कि वाणी का ओज और चेतना का पराक्रम कभी शिथिल नहीं पड़ा। वे सिंह की तरह सदा गूँजते रहे। भय और निराशा उनके शब्द कोश में ही नहीं थे। दिव्यता, अप्रमत्तता और शुचिता के वे संगम पुरुष थे। 'ज्यों की त्यों धर दीनी रे चदरिया' के वे सार्थक प्रतीक बनें। उनका जीवन द्वितीया के चाँद की तरह सदा प्रवर्द्धमान रहा। उनके महाप्रयाण के पश्चात् दिल्ली में आयोजित स्मृति सभा में अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा था—"आचार्य श्री तुलसी अग्रणी संत, चिंतक और कर्मयोगी थे। वे महान् दृष्टिसंपन्न आचार्य थे। सार्वजनिक जीवन की शुद्धता के लिए उन्होंने अहर्निश कार्य किया। मनुष्यों को जोड़ देने की कला और समस्याओं के समाधान का विज्ञान उनके पास था। उन्होंने आचार्य पद छोड़ दिया, मानो वे महाप्रस्थान की तैयारी कर रहे थे।" राष्ट्रीय समाचार पत्र दैनिक हिंदुस्तान के मुख्य संवाददाता रमाकांत गोस्वामी ने एक बार मुझसे (मुनि मदन कुमार) मिलन-प्रसंग पर कहा था कि राष्ट्रऋषि आचार्यश्री तुलसी जैन धर्म के शंकराचार्य थे। वे 'भारत रत्न' के सच्चे अधिकारी हैं। उन्होंने अणुव्रत आंदोलन को प्रभावी ही नहीं बल्कि जिस आध्यात्मिक ढंग से चलाया, वह एक जबर्दस्त मिशाल है। वे नैतिक मूल्यों के पर्याय बन गए थे। आचार्य श्री महाप्रज्ञ के शब्दों में आचार्यश्री तुलसी की कमी मानव जाति को सदा अखरेगी। वे सिद्धपुरुष थे। उनकी शीतलता, तेजस्विता और गंभीरता अलौकिक थी। आचार्यश्री तुलसी का इतिहास तेरापंथ या जैन समाज का इतिहास नहीं, बल्कि मानव जाति का इतिहास है। प्रामाणिकता, सच्चाई और भारतीय संस्कृति का इतिहास है।

शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन

गंगाशहर।

मुनि शांति कुमार जी एवं मुनि जितेंद्र कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा, गंगाशहर की नवगठित कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह आयोजित हुआ। द्वितीय कार्यकाल के लिए निर्वाचित सभा अध्यक्ष अमरचंद सोनी ने कार्यकारिणी की घोषणा की।

मुनि शांति कुमार जी ने सभी को आगामी कार्यकाल के लिए आशीर्वाद देते हुए मंगलपाठ सुनाया। मुनि जितेंद्र कुमार जी ने प्रेरणा प्रदान की। मुनि अनुशासन कुमार जी एवं मुनि अनेकांत कुमार जी ने वक्तव्य एवं गीत की प्रस्तुति दी।

समारोह में वरिष्ठ श्रावक जीवराज श्यामसुखा ने अध्यक्ष अमरचंद सोनी को शपथ ग्रहण करवाई। इस अवसर पर तेरापंथ न्यास से कन्हैयालाल फलोदिया, तेरापंथ महासभा संरक्षक जैन लूणकरण छाजेड़, आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान मंत्री हंसराज डागा, तेयुप अध्यक्ष अरुण नाहटा, महिला मंडल मंत्री कविता चोपड़ा, अणुव्रत समिति अध्यक्ष राजेंद्र बोथरा ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन देवेंद्र डागा, रोहित बैद ने किया।

कार्यक्रम में तारादेवी बोथरा ने मुनिश्री से मासखमण तप (३१ दिन) का प्रत्याख्यान किया। अनुमोदना में गीत का संगान कर मुनिश्री ने तपस्या हेतु सभी को प्रेरित किया। सभा गीत के सामूहिक संगान से कार्यक्रम संपन्न हुआ।

शासनश्री साध्वी रतनश्री जी के प्रति आध्यात्मिक उद्‌गार

● डॉ० साध्वी परमयशा, साध्वी विनम्रयशा, साध्वी मुक्ताप्रभा एवं साध्वी कुमुदप्रभा ●

शासनश्री साध्वी रतनश्री जी तेरापंथ धर्मसंघ की एक विशिष्ट साध्वी थी। आप एक आचारनिष्ठ, गुरुनिष्ठ, गणनिष्ठ, मर्यादा निष्ठ एवं आगमनिष्ठ आदर्श जीवन जीने वाली महाशक्ति थी।

आप एक दबंग विनम्र विदुषी और शासन के संस्कारों से श्री संपन्न साध्वी थी।

Peaceful, Powerful mind, Positive mind से आपने धर्मसंघ की गरिमा में चार चाँद लगा दिए। दूर देशों की यात्राओं से आत्मकल्याण, जन-कल्याण का संदेश आपने जन-जन को प्रदान किया।

आपने अंतिम समय में संथारा संलेखना से अंतिम मनोरथ को सफल बनाया। अहमदाबाद की गरिमा को शिखरों चढ़ा दिया। तेरापंथ शासन में सुयश शंख बजा दिया। अपनी जन्मभूमि लाडनूं का नाम अमर कर दिखाया।

साध्वी रमावती जी, साध्वी हिमश्री जी, साध्वी मुक्तियशा जी, साध्वी चैतन्ययशा जी ने सेवा का भरपूर लाभ लिया। आपको चित्त समाधि देते हुए गुरु कृपा से आशीर्वाद प्राप्त किया है। हमने अहमदाबाद प्रवास में शासनश्री जी की कृपा वत्सलता को प्राप्त किया।

शासनश्री जी की दिवंगत आत्मा मोक्षगामी बने।

आध्यात्मिक विकास की मंगलकामना।

क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट का नगर स्तरीय आयोजन

राजलदेसर।

अणुव्रत विश्व भारती के तत्त्वावधान में अणुव्रत समिति, राजलदेसर द्वारा अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट के तहत तेरापंथ भवन में गायन एवं भाषण की नगर स्तरीय प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। विभिन्न विद्यालयों के विद्यार्थियों ने बड़े उत्साह से भाग लिया। साध्वी मंगलप्रभा जी द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से कार्यक्रम की शुरुआत की गई। अणुव्रत समिति अध्यक्ष शंकरलाल सोनी ने सभी का स्वागत किया।

कार्यक्रम में तेरापंथी सभा के अध्यक्ष विमल सिंह दुधेड़िया, उपाध्यक्ष राजकुमार विनायकिया, महिला मंडल मंत्री सविता बच्छावत, तेयुप के मंत्री रजत बैद, कन्या मंडल की सदस्यों सहित अणुव्रत समिति के सदस्य मंगतमल पांडिया, मूलचंद सोनी आदि उपस्थित रही।

अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट में गायन एवं भाषण प्रतियोगिता में तीन ग्रुपों में ७५ से अधिक बच्चों ने भाग लिया। गायन प्रतियोगिता प्रथम वर्ग में राजल पब्लिक स्कूल की छात्रा दिव्या घोषल ने प्रथम एवं राम विद्यालय के छात्र शंकर माली ने द्वितीय स्थान एवं अभिनव बाल भारती की छात्रा हिमांशी सोनी ने तृतीय स्थान, तृतीय वर्ग में भारतीय इंटरनेशनल स्कूल की छात्रा निकिता शर्मा ने प्रथम, रा०उ०मा०वि० के छात्र युवराज भाटी ने द्वितीय एवं विकास सोनी ने तृतीय स्थान तथा समूह गायन में अभिनव बाल भारती उच्च प्राथमिक विद्यालय के बच्चों ने प्रथम एवं आदर्श विद्या मंदिर के बच्चों ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

भाषण प्रतियोगिता में प्रथम वर्ग में राजल पब्लिक स्कूल की छात्रा हैप्पी प्रजापत ने प्रथम स्थान, द्वितीय वर्ग में आदर्श विद्या मंदिर की छात्रा जिया बैद ने प्रथम, अभिनव बाल भारती उच्च प्राथमिक विद्यालय की छात्रा साक्षी पांडे ने द्वितीय एवं रा०उ०मा० विद्यालय की छात्रा मोनिका प्रजापत ने तृतीय स्थान तथा तृतीय वर्ग में भारतीय इंटरनेशनल स्कूल की छात्रा पायल सैनी ने प्रथम, रा०उ०मा०वि० के छात्र गौतम नाई ने द्वितीय एवं अभिनव बाल भारती उ०मा० विद्यालय की छात्रा गीतांजलि ओझा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। गायन प्रतियोगिता में संगीतज्ञ विनोद कत्थक एवं तुलसीराम पांडे तथा भाषण प्रतियोगिता में डॉ० राजशेखर एवं डॉ० उषा किरण सोनी निर्णायक मंडल रहे। निर्णायक मंडल के सदस्यों का समिति के अध्यक्ष शंकरलाल सोनी ने अणुव्रत दुपट्टा पहनाकर एवं साहित्य भेंट कर सम्मान किया। कार्यक्रम का संचालन अशोक बैद ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
24 - 30 अक्टूबर, 2022

✦ *जिसे तुम अपना मित्र बनाते हो, उसके साथ सच्चा हार्दिक संबंध कायम करो। परस्पर एक-दूसरे का हित करने का संकल्प करो।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

गीत प्रतियोगिता का आयोजन

कांटाबाजी।

मुनि प्रशांत कुमार जी के सान्निध्य में 'एक शाम वतन के नाम' गीत प्रतियोगिता तेरापंथ कन्या मंडल द्वारा आयोजित हुई। मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा कि देश-भक्ति के गीतों की सुंदर प्रतियोगिता आयोजित हुई। देशभक्ति के गीत सभी को प्रिय लगते हैं। देशभक्ति गीत सुनने से देश-प्रेम जागृत होता है। हमारा व्यवहार एवं आचरण से देश की ताकत बढ़ती है। नागरिक का आचरण देश-प्रेम से जुड़ा हुआ होना चाहिए। कांटाबाजी में प्रतिभाओं का भंडार है। इसी तरह अपना विकास करते रहें।

मुनि कुमद कुमार जी ने कहा कि देश के लिए जज्बा, जुनून केवल शब्दों में न हो वह हमारे जीवनशैली, विचारों में होना चाहिए। व्यक्ति अपने आपमें परिवर्तन लाए तो समाज एवं राष्ट्र का सर्वांगीण विकास होगा।

कन्या मंडल संयोजिका पूजा ने देश के महत्त्व को बताया। जूनियर ग्रुप से प्रथम इशिका, द्वितीय तनुष्का, तृतीय पूजा रही। सीनियर ग्रुप से प्रथम स्थान ऋतु, द्वितीय ज्योति एवं तृतीय घासीराम ने प्राप्त किया। प्रतियोगिता में निर्णायक की भूमिका संजय जैन एवं सुनीता एस० ने पूर्ण की। कार्यक्रम का संचालन पूजा जैन ने किया एवं आभार ज्ञापन कन्या मंडल सह-संयोजिका आंचल जैन ने किया।

होम हेल्पर्स कार्यशाला का आयोजन

कोयंबटूर।

तेममं के तत्त्वावधान में अभातेममं के निर्देशानुसार समृद्ध राष्ट्रीय परियोजना के अंतर्गत होम हेल्पर्स कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से उपासिका बहन ललिता बरलोटा ने किया। मंगलाचरण महिला मंडल की बहनें—स्नेहलता नाहटा व अंशु रांका के द्वारा हुआ। स्वागत भाषण मंत्री आरती रांका ने किया। साध्वी धैर्यप्रभा जी ने तमिल भाषा में साधु के महाव्रतों के बारे में जानकारी दी। साध्वीश्री जी की प्रेरणा से ७ तमिल हेल्पर्स ने आजीवन मांसाहार का त्याग और ५ तमिल बहनों ने १ साल के लिए महीने में एक बार का त्याग किया।

मुख्य अतिथि गाइनो डॉ० भारती सिंह ने महिलाओं में होने वाली मासिक धर्म के उतार-चढ़ाव के बारे में अवगति दी। जनरल फिजिशियन डॉ० शालिनी ने अपने स्वास्थ्य को स्वस्थ और निरोग कैसे रख सकते हैं, उनके बारे में जानकारी दी।

एलआईसी एजेंट भरत बोहरा ने मनी सेविंग के बारे में जानकारी दी। सभी मुख्य अतिथियों का साहित्य व पंचरंगी दुपट्टा से सम्मान अध्यक्ष मंजु गिडिया, आरती रांका व सुमन सुराणा द्वारा किया गया।

महिला मंडल, कन्या मंडल द्वारा संयुक्त होम हेल्पर्स बहनों को मनोरंजक गेम्स आदि खिलवाए गए। और प्रथम, द्वितीय स्थान प्राप्तकर्ताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए। सहमंत्री कनकप्रभा बुच्चा ने बताया कि तुलसी शिक्षा परियोजना के अंतर्गत नेहरू विद्यालय के विद्यार्थी को साल-भर स्कूल फीस की राशि महिला मंडल से प्रदान की गई।

कार्यशाला का संयोजन व धन्यवाद ज्ञापन तमिल भाषा में उपासिका ललिता बरलोटा ने किया। साध्वी अनुप्रेक्षाश्री जी और साध्वी सन्मतिप्रभा जी ने मंगलपाठ सुनाया। कार्यक्रम में कुल ७० बहनों की उपस्थिति रही।

प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन

कटक, ओड़िशा।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन तेममं द्वारा तेरापंथ भवन में किया गया। कार्यशाला में लगभग ५० साधकों ने भाग लिया। कार्यशाला में मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि दुनिया में उसने बड़ी बात कर ली, खुद अपने से जिसने मुलाकात कर ली। जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है अपने आप में रहना। जिस प्रकार शरीर में मस्तिष्क का तथा वृक्ष में उसकी जड़ का महत्त्वपूर्ण स्थान है। उसी प्रकार आत्म-धर्म की साधना में ध्यान का प्रमुख स्थान है। ध्यान का अर्थ है—आत्मा में रमण करना।

मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि जैन धर्म में प्राचीन काल से ध्यान की विधियाँ प्रचलित रही हैं। ध्यान साधक एवं अनुसंधाता आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने विच्छिन्न हुई ध्यान परंपरा को प्रेक्षाध्यान के रूप में आविष्कृत कर मानव जाति पर महान उपकार किया है। प्रेक्षाध्यान पद्धति अध्यात्म व विज्ञान के समन्वय का सुंदर उदाहरण है। प्रेक्षाध्यान तनावमुक्ति की उत्तम प्रक्रिया है।

इस अवसर पर मुनि परमानंद जी ने कहा कि प्रेक्षाध्यान कर्म निर्जरा व तनाव मुक्ति का महत्त्वपूर्ण माध्यम है। प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन ध्यान करना चाहिए। कार्यक्रम का शुभारंभ बाल मुनि कुणाल कुमार जी द्वारा प्रेक्षा गीत के संगान से हुआ। आभार ज्ञापन समता सेठिया ने किया।

रूपांतरण शिल्पशाला-क्षमा कार्यशाला

अमराईवाड़ी।

अभातेममं के निर्देशन में तेममं द्वारा रूपांतरण थ्रू जैनिज्म शिल्पशाला का आयोजन शासनश्री साध्वी सरस्वती जी के सान्निध्य में किया गया। जिसका विषय था—क्षमा। कार्यशाला की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से साध्वीश्री जी ने करवाई। महिला मंडल की बहनों ने प्रेरणा गीत के द्वारा मंगलाचरण किया। अध्यक्षा संगीता सिंघवी ने कार्यशाला में उपस्थित स्थानकवासी समाज एवं तेरापंथी समाज के सभी श्रावक-श्राविकाओं का स्वागत किया।

शासनश्री साध्वी सरस्वती जी ने कहा कि क्षमा वीरों का आभूषण है। जो व्यक्ति शूरवीर होता है वही क्षमा माँग सकता है और क्षमा प्रदान कर सकता है।

साध्वी संवेगप्रभा जी ने कहा कि क्षमा करने से मानसिक पवित्रता का विकास होता है और पवित्र मन से सभी के प्रति मैत्री के भाव पैदा होते हैं। भगवान महावीर, गजसुकुमाल, महासती सीता आदि अनेक क्षमासुरों के जीवन प्रसंग द्वारा क्षमा के महत्त्व को समझाया।

साध्वी तरुणप्रभा जी ने तथा साध्वी परमार्थप्रभा जी ने कविता के द्वारा प्रेरणा दी। कार्यक्रम में स्थानकवासी समाज के श्रावक-श्राविकाओं सहित सभा, तेयुप, महिला मंडल की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का संचालन मंत्री लक्ष्मी सिसोदिया ने किया तथा आभार ज्ञापन सहमंत्री हिना पगारिया ने किया। लगभग ५० भाई-बहनों की उपस्थिति रही।

भक्तामर अनुष्ठान का आयोजन

राजाराजेश्वरी नगर, बैंगलोर।

शासनश्री साध्वी शिवमाला जी के सान्निध्य में भक्तामर स्तोत्र के सविधि जपानुष्ठान का आयोजन किया गया। साध्वीश्री जी ने कहा कि आचार्य मानतुंग ने लगभग १३०० वर्ष पूर्व सातवीं शताब्दी में वसंत तिलका छंद में प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ जी की स्तुति करते हुए इस चमत्कारी स्तोत्र की रचना की।

आचार्य मानतुंग को जब राजा भोज ने जेल में बंद करवा दिया था। उस जेल के ४८ दरवाजे थे जिन पर ४८ मजबूत ताले लगे हुए थे। तब आचार्य मानतुंग ने भक्तामर स्तोत्र की रचना की तथा हर श्लोक की रचना पर ताला टूटता गया। इस तरह ४८ श्लोकों पर ४८ ताले टूट गए थे। तब से अनेकानेक लोगों ने इसके चमत्कार का अनेक बार साक्षात अनुभव किया। जपानुष्ठान में अच्छी संख्या में श्रावक समाज उपस्थित रहा। एक सुर में बड़े ही अनुशासनबद्ध रूप में समुपस्थित जन-समुदाय को एक अलौकिक आभामंडल की अनुभूति हुई।

विद्या के साथ विनय और विवेक जरूरी

माधावरम्, चेन्नई।

मुनि सुधाकर कुमार जी के सान्निध्य में आचार्य महाश्रमण तेरापंथ जैन पब्लिक स्कूल में ६५० से अधिक विद्यार्थियों के मध्य ज्ञानाराधना एवं स्मृति विकास में मंत्र, वास्तु आहार और जीवन की भूमिका पर विशेष प्रवचन एवं अनुष्ठान का आयोजन किया गया।

मुनि सुधाकर कुमार जी ने कहा कि विद्यार्थी को अपने जीवन में विद्या के साथ-साथ विनय और विवेक का भी विकास करना चाहिए। मुनिश्री ने आगमों में वर्णन जैन मंत्रों से भी स्मृति विकास के लिए अनुष्ठान एवं प्रयोग कराया, उसी के साथ वास्तु के नियम भी विस्तार से बताए।

मुनि नरेश कुमार जी ने गीतिका का संगान किया। मंगलाचरण विल्लीवाक्कम विद्यार्थियों ने किया। स्वागत स्वर ट्रस्ट बोर्ड प्रबंध न्यासी घीसूलाल बोहरा ने दिया। कन्याबाई भंसाली ने २६ उपवास की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

कार्यक्रम के प्रायोजक कुशलराज, अशोक कुमार बम्बोली परिवार का सम्मान ट्रस्ट बोर्ड की ओर से माणकचंद आच्छा एवं रमेश परमार ने किया। संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन कार्यक्रम के संयोजक अर्पित चोरड़िया एवं कृतिका पुगलिया ने किया।

विकास महोत्सव का आयोजन

मंडिया।

साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में तेयुप द्वारा आयोजित २९वाँ विकास महोत्सव के कार्यक्रम को तेरापंथ भवन में मनाया गया। साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी के पट्टोत्सव से संबंधित प्रेक्षा प्रणेता आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी द्वारा प्रदत्त यह अवदान विकास महोत्सव है। आचार्यश्री तुलसी उस विकास पुरुष का नाम है जिसके कारण उनके कण-कण में जवानी का जोश उभरता रहा। जिसकी ख्याति राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय दोनों क्षेत्रों में व्याप्त हो चुकी है।

साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी का जीवन असीम है। उसे शब्दों में बाँधना गीतों में गूँथना, असंभव है। सभा-संस्थाओं, साहित्य, सेवा, आगम संपादन आदि अनेक क्षेत्रों में विकास के परचम फहराए हैं।

साध्वी मेरुप्रभा जी ने गीतिका प्रस्तुत की। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वी दक्षप्रभा जी के मंगलाचरण से हुई। गदग तेरापंथ सभा के अध्यक्ष सुरेश कोठारी, अमृतलाल कोठारी, महिला मंडल मंत्री विजेता भंसाली, गायक विकास कोठारी, सीमा कोठारी आदि ने विचार रखे एवं खमतखामणा की। आचार्य तुलसी के व्यक्तित्व और कर्तृत्व पर हरीश-हेमलता सेठिया, ललिता भंसाली, उषा आच्छा, कोमल आच्छा, नीतू श्रीमाल, किरण भटेवरा, सपना सेठिया, चंदनमल बोहरा, पूर्व अध्यक्ष विनोद भंसाली आदि ने भावों की प्रस्तुति दी। संचालन युवा कार्यकर्ता संदीप आच्छा ने किया।

दंपति कार्यशाला - 'हैप्पी एंड हैल्दी रिलेशनशिप'

जयपुर।

तेयुप, तेममं, सी-स्कीम व टीपीएफ के संयुक्त तत्त्वावधान में शासन गौरव बहुश्रुत साध्वी कनकश्री जी के सान्निध्य में दंपति कार्यशाला का आयोजन स्वतंत्र राष्ट्र के अमृत महोत्सव वर्ष में 'हैप्पी एंड हैल्दी रिलेशनशिप' विषय पर भिक्षु साधना केंद्र में आयोजित हुई। इस कार्यशाला में विवाहित जोड़ों ने भाग लिया।

कार्यशाला में जाने-माने मोटिवेशनल स्पीकर राकेश जैन ने बताया कि महिलाओं व पुरुषों को चाहिए कि वे कॉमप्लिमेंट और कंपलेंट बनें यानी एक-दूसरे के कार्यों में सहायक बनने का प्रयास करें। एक-दूसरे की भूलों को भूलने का प्रयास करें और अपनी भूलों में सुधार करने से जो रिएक्शन होगा, उसका प्रभाव आपकी जीवनशैली पर व्यापक प्रभाव डालेगा।

तेयुप के अध्यक्ष सुरेंद्र नाहटा ने कार्यशाला में भाग लेने वाले दंपतियों का स्वागत करते हुए कहा कि वैवाहिक जीवन में सुखी रहने के लिए आवश्यक है, परिवार के सभी सदस्यों के मध्य संवाद बना रहना चाहिए। संवाद में भी मतभेद हो, लेकिन मनभेद कभी नहीं होना चाहिए।

परिषद के उपाध्यक्ष विनय भंसाली ने बताया कि कार्यक्रम की संयोजना में प्रज्ञा सुराणा सहित तेयुप, तेममं, सी-स्कीम व टीपीएफ के कार्यकर्ताओं का श्रम रहा। आभार ज्ञापन टीपीएफ के डॉ० अमित बैंगानी ने किया।

पर्युषण महापर्व का आयोजन

सेनफ्रेंसिको, कैलिफोर्निया।

समणी सन्मतिप्रज्ञा जी और समणी जयंतप्रज्ञा जी ने वर्ष २०२२ में Jain Center of Northern California (JCNC) में प्रवास किया और कैलिफोर्निया के श्रावकों को धर्म लाभ करने का सुअवसर प्रदान किया। अपने प्रवास के दौरान समणीजी ने विभिन्न श्रावक-श्राविकाओं के घरों व जेसीएनसी में कई गतिविधियों व प्रवचनों का आयोजन किया–

– पर्युषण की शुरुआत समणीजी द्वारा तैयार किए गए एक रचनात्मक पीपीटी और पर्युषण की तैयारी व पर्व मनाने के तरीके पर एक व्याख्यान के साथ की गई। इसमें रचनात्मक रूप से समझाया गया कि प्रतिदिन कौन-कौन से कार्य करने चाहिए और पर्युषण के प्रत्येक दिन का क्या महत्त्व है। एक ट्रेन–जिसके कोच के रूप में दैनिक गतिविधियों और ८ स्टेशनों के रूप में पर्युषण के ८ दिवस के उदाहरण से बताया गया। इसने समुदाय में जागरूकता पैदा की और सभी को पर्युषण के प्रति उत्साहित किया।

– जेसीएनसी में पर्युषण के दौरान श्रावकों को दैनिक सायंकालीन प्रतिक्रमण करवाया।

– पर्युषण के ८ दिनों के दौरान जेसीएनसी में दैनिक दो व्याख्यान शृंखला का आयोजन किया।

(१) आध्यात्मिक रोगों की पहचान और उपचार : जिसमें विभिन्न विषयों को शामिल किया गया–जैसे अध्यात्म क्या है? मैं कौन हूँ? दुःख कहाँ से आते हैं? चिंतन और अचिंतन। मन की सबसे बड़ी शक्ति अचिंतन है। तप और ध्यान, विचार शुद्धि, श्रद्धा, सम्यक् दर्शन, संवर और निर्जरा।

(२) अरिष्टनेमी भगवान का जीवन चरित।

– जेसीएनसी में पर्युषण के सभी ८ दिनों के दौरान बच्चों के लिए दैनिक विशेष सत्र भी लिया।

– तेरापंथ इतिहास और तेरापंथ प्रबोध पर विशेष रूप से तेरापंथी समुदाय के लिए एक व्याख्यान किया।

– युवाओं के लिए विशेष व्याख्यान और प्रश्नोत्तर सत्र लिया, इस सत्र ने युवा किशोरों और युवाओं के सवालों के जवाब दिए और उनकी जैन मान्यताओं को मजबूत करने में मदद की।

– विभिन्न घरों में अन्य व्याख्यानों के दौरान समणी जी ने कई विषयों को छुआ। श्रावकों के प्रश्नों और जिज्ञासाओं के समाधान भी किए। उन्होंने सबको शनिवार शाम ७-८ बजे साप्ताहिक सामायिक करने के लिए प्रोत्साहित किया।

– जूम कॉल पर भक्ति गीत के माध्यम से लॉस एंजिल्स समुदाय में एक अठाई तप की अनुमोदना की गई।

– पूरे कैलिफोर्निया का प्रतिनिधित्व करने वाले एक पंजीकृत संगठन को संगठित करने और बनाने के लिए तेरापंथ समुदाय को प्रोत्साहित किया।

– इस वर्ष भिक्षु स्वामी की तेरस को मनाने के लिए समुदाय को प्रोत्साहित किया, परिणामस्वरूप तेरस को २७ सदस्य मंदिर में एकत्र हुए और भक्ति गीत गाये, समणीजी ने सिंगापुर से जूम पर तेरापंथ के शुरुआती दिनों के दौरान भिक्षु स्वामी के जीवन और संघर्षों पर एक प्रवचन भी दिया।

– समणीजी के प्रोत्साहन और आशीर्वाद से ५ से १२ साल के छोटे बच्चों के लिए जीवन-विज्ञान और प्रेक्षाध्यान पाठ्यक्रम शुरू किया गया।

– समणीजी ने समुदाय के सदस्यों को अगले साल जैन विद्या परीक्षा लेने के लिए प्रोत्साहित किया।

पर्युषण से पहले ६-७ अगस्त को जेसीएनसी की एनिवर्सिरी कार्यक्रम के उपलक्ष्य में आयोजित Interfaith religious conference, में समणीजी ने भाग लिया, जिसमें ईसाई, इस्लाम, सिक्ख, हिंदू धर्म और यहूदी धर्म के स्थानीय धार्मिक नेताओं के साथ धार्मिक चर्चा की। चर्चा का विषय था–'क्या धर्म एक जीवित घटना है?' कार्यक्रम सुंदर और प्रभारी रहा।

पर्युषण के दौरान व्याख्यान सत्र जूम पर ऑनलाइन स्ट्रीम किए गए। जूम के परिणामस्वरूप LosAngeles से कई श्रावक-श्राविका व्याख्यान व दैनिक प्रतिक्रमण में शामिल हो सके।

अपनी यात्रा के दौरान समणीजी ने १०० से अधिक तेरापंथी लोगों की सार-संभाल की।

प्रेक्षाध्यान कार्यक्रम

सिकंदराबाद।

साध्वी त्रिशला कुमारी जी की प्रेरणा से श्रद्धा की प्रतिमूर्ति, अणुव्रत सेवी निर्मला बैद ने गवर्नमेंट बॉयज व गर्ल्स कॉलेज में कार्यक्रम किया। कॉलेज के विद्यार्थियों ने मंगलाचरण राष्ट्रीय गान से शुरू किया। विद्यार्थियों को डायरेक्टर ने कार्यक्रम की प्रेरणा दी। विद्यार्थियों को इमोशनल डेवलेपमेंट, आज की बढ़ती हुई समस्याओं से कैसे बच सकते हैं, धैर्य एवं विनम्रता के तरीके बताए। मन की चंचलता को कम करने व स्मरण शक्ति बढ़ाने के कई प्रयोग बताए गए। प्रिंसिपल ने निर्मला बैद का आभार ज्ञापित किया व तेलुगु भाषा में कई बातें बताई। राष्ट्रीय गान के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम

✻ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
✻ श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
✻ श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
✻ श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई	5,00,000
✻ श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
✻ श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
✻ श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
✻ श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
✻ श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000
✻ श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा	5,00,000
✻ श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	5,00,000
✻ श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छापर-सिलीगुड़ी	5,00,000
✻ श्री बसंत नवलखा, बीकानेर	5,00,000
✻ श्री बिमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर	5,00,000

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

नूतन व्यावसायिक प्रतिष्ठान

दिल्ली।

संदीप जैन के नूतन व्यावसायिक प्रतिष्ठान का शुभारंभ संस्कारक राजकुमार जैन, सौरभ आंचलिया ने मंगल मंत्रोच्चार द्वारा जैन संस्कार विधि द्वारा संपादित करवाया।

तेयुप, दिल्ली की तरफ से जैन परिवार का आभार व्यक्त किया तथा मंगलभावना यंत्र भेंट किया गया।

दिल्ली।

प्रदीप संचेती के नूतन व्यावसायिक प्रतिष्ठान का शुभारंभ संस्कारक विमल गुणेचा व आयाम राज्य सहयोगी संस्कारक मनीष बरमेचा ने मंगल मंत्रोच्चार व विधिवत् रूप से जैन संस्कार विधि द्वारा संपादित करवाया।

तेयुप दिल्ली की तरफ से संचेती परिवार का आभार व्यक्त किया गया तथा संचेती परिवार को मंगलभावना यंत्र भेंट किया गया।

गंगाशहर।

ऋषभ लालाणी पुत्र मनोज कुमार लालाणी के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि द्वारा जैन संस्कारक पवन छाजेड़ और देवेंद्र डागा ने विधि-विधानपूर्वक मंत्रोच्चार के साथ करवाया।

इस अवसर पर तेयुप के अध्यक्ष अरुण नाहटा, उपाध्यक्ष विनीत बोथरा, संगठन मंत्री रोहित बैद, धनपत भंसाली, शांतिलाल लालाणी आदि पारिवारिकगण की उपस्थिति रही।

गुरुग्राम।

कंचनदेवी टांटिया के पुत्रवधू पंकज-अनिता टांटिया के नूतन व्यावसायिक प्रतिष्ठान का शुभारंभ संस्कारक सुशील डागा व अनिल सेठिया ने मंगल मंत्रोच्चार व विधिवत् रूप से जैन संस्कार विधि द्वारा संपादित करवाया।

तेयुप, दिल्ली की तरफ से टांटिया परिवार का आभार व्यक्त किया।

नालासोपारा।

सुशील बाफना बोरियापुरा के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक पारस बाफना व रमेश ढालावत ने विधि-विधानपूर्वक संपन्न करवाया।

इस अवसर पर सभा अध्यक्ष लक्ष्मीलाल मेहता, तेयुप अध्यक्ष किशन कोठारी, रतनलाल सिंघवी, चंदा, ललित कोठारी, बिनल बाफना, सुशील लोढ़ा एवं पारिवारिक जनों की उपस्थिति रही।

गंगाशहर।

अशोक दुगड़ पुत्र मांगीलाल दुगड़ के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि द्वारा जैन संस्कारक पवन छाजेड़ और देवेंद्र डागा ने विधि-विधानपूर्वक संपन्न करवाया।

इस अवसर पर मेघराज मरोठी, कन्हैयालाल सेठिया आदि पारिवारिकजनों की उपस्थिति रही।

नूतन गृह प्रवेश

रायपुर।

सरदारशहर निवासी, रायपुर प्रवासी नवीन दुगड़ के नवीन निवास स्थान का गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संपन्न कराया गया।

संस्कारक सूर्यप्रकाश बैद एवं अर्पित गोखरू द्वारा विधिवत् मंत्रोच्चार द्वारा जैन संस्कार विधि से कार्यक्रम संपादित करवाया। कार्यक्रम में समाज के गणमान्य व्यक्तियों के साथ पारिवारिकजनों की उपस्थिति रही।

तेयुप मंत्री महेश गोलछा ने दुगड़ परिवार एवं संस्कारकों का आभार व्यक्त किया।

✦ *अपनी आकांक्षाओं को सीमित करो, दुःख भी सीमित हो जाएगा।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

भिक्षु चरमोत्सव के विविध आयोजन

विवेक विहार, दिल्ली

ओसवाल भवन में आचार्य भिक्षु चरमोत्सव के आयोजन में शासनश्री साध्वी रतनश्री जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु ने इस तेरापंथ धर्मसंघ को खून और पसीने का अभिसिंचन दिया है। तभी यह शताब्दियों के बाद भी सरसब्ज बना हुआ है। लाखों-लाखों व्यक्तियों को शीतल छाया प्रदान कर रहा है। आचार्य भिक्षु अपने लक्ष्य के प्रति सतत गतिमान रहे। समागत संघर्षों को हँसते-हँसते झेलते रहे। प्रत्येक संप्रदाय के व्यक्ति तेरापंथ संप्रदाय को आगे बढ़ने से रोक रहे थे।

शासनश्री साध्वी सुव्रता जी ने भिक्षु नाम एक चमत्कार के संदर्भ में भावाभिव्यक्ति दी। शासनश्री साध्वी सुमनप्रभा जी ने भिक्षु जीवन प्रसंगों का उल्लेख करते हुए कहा कि उन्होंने मंगलवार को जन्म लिया और मंगलवार को ही स्वर्गारोहण किया, इसलिए तेरापंथ संघ में मंगल ही मंगल है। साध्वी चिंतनप्रभा जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु की महानता का महामंत्र था, उन्होंने विरोध को विनोद समझा। विष को अमृत में और अंधकार को प्रकाश में बदला। संघर्षों को हँसते-हँसते झेला। कार्यक्रम का शुभारंभ सुमन सिंधी ने किया।

भानुप्रकाश बरड़िया, विकास नाहटा, धनपत सिंधी, सभामंत्री आनंद बुच्चा, मुदित चोरड़िया, गुलाब भंसाली ने भिक्षु चरणों में श्रद्धा सुमन अर्पित किए। कार्यक्रम का संचालन सभाध्यक्ष पन्नालाल बैद ने किया।

कानपुर

साध्वी डॉ० पीयूषप्रभा जी के सान्निध्य में आचार्यश्री भिक्षु का २२०वाँ चरमोत्सव मनाया गया। चरमोत्सव का शुभारंभ साध्वीवृंद ने सामूहिक जप से किया। पूनमचंद सुराणा ने मंगलाचरण किया। साध्वी डॉ० पीयूषप्रभा जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु पौरुष के जीवंत प्रतीक हैं। जीवन-भर परिश्रम किया। आगमों का अवगाहन किया। कितनों को सत्य की राह दिखाई और आत्म-कल्याण किया। अनेकानेक शुभ लक्षणों के साथ जन्मे आचार्य भिक्षु धर्म क्रांति लाए। उस क्रांति का नाम हुआ—तेरापंथ। शक्तिसंपन्न भिक्षु ने अपने जीवन में अनेक संघर्षों का सामना किया। तेरापंथ के जन्मदाता भिक्षु को बारंबार नमन।

साध्वी भावनाश्री जी ने कहा कि स्वामी जी की साधना की ऊँचाई और गहराई निर्वचनीय है। आत्म-कल्याण के लिए बढ़े कदम, बढते ही गए। साध्वी सुधाकुमारी जी ने गीत की प्रस्तुति दी। साध्वी दीप्तियशा जी ने आचार्य भिक्षु को भावित अणगार बताया और कभी ना बुझने वाला दीपक की संज्ञा दी, जिसकी किरणें आज भी जग को आलोकित कर रही हैं।

सभा अध्यक्ष धनराज सुराणा, अणुव्रत समिति अध्यक्ष टीकमचंद सेठिया, पटना से आए हुए मनोज बैंगानी और तनसुख बैद एवं कानपुर महिला मंडल ने गीत-वक्तव्य प्रस्तुत किए। संघगान के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ। कार्यक्रम का संयोजन सभा मंत्री संदीप जम्मड़ ने किया। सायंकाल को धम्म जागरण का आयोजन हुआ, जिसमें सब श्रावकों के मधुर भिक्षु भजनों से भवन गुंजायमान हुआ। कानपुर श्रावक समाज ने जप-तप के साथ चरमोत्सव मनाया।

राजाराजेश्वरी नगर

शासनश्री साध्वी शिवमाला जी के सान्निध्य में आचार्य भिक्षु महाप्रयाण दिवस का आयोजन किया गया। साध्वीश्री जी ने आचार्य भिक्षु की निर्भीकता, आचार-शुद्धि एवं भगवान महावीर के वचनों के प्रति अगाढ़ श्रद्धा का उल्लेख किया। साध्वी अमितरेखा जी ने आचार्य भिक्षु की विलक्षण प्रतिभा का उल्लेख करते हुए उनके अंतिम दिनों का विवरण बताया कि किस तरह उनकी अंतर्प्रज्ञा जाग्रत थी। वे शास्त्रों के स्वाध्याय में उपरत रहते थे। साध्वी अर्हमप्रभा जी ने, साध्वी रत्नप्रभा जी ने गीतिकाओं के माध्यम से अभिवंदना के स्वर प्रस्तुत किए।

कार्यक्रम में रेखा मरोठी ने १६ की तपस्या के प्रत्याख्यान किए। साध्वीश्री जी ने तप की अनुमोदना करते हुए कहा कि तेले से क्रमशः बढ़ते हुए १६ तक सहज भाव से बढ़ती गई।

सभाध्यक्ष छतरसिंह सेठिया, तेमम अध्यक्षा लता बाफना, तेयुप अध्यक्ष कौशल लोढ़ा ने भाव व्यक्त किए। दिनेश मरोठी, प्रज्ञा मरोठी ने तप अनुमोदना में भाव व्यक्त किए। तप-अभिनंदन पत्र से तपसन रेखा मरोठी को सम्मानित किया गया। संचालन गुलाब बांठिया ने किया।

मदुरै

तेरापंथी महासभा के निर्देशन में तेरापंथ सभा, तेमम एवं तेयुप के संयुक्त तत्त्वावधान में ॐ भिक्षु-जय भिक्षु का सवा लाख का जप अनुष्ठान तेरापंथ ट्रस्ट अध्यक्ष ओमप्रकाश कोठारी के निवास पर हुआ। जिसमें लगभग सभी भाई-बहनों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। कोठारी परिवार ने सभी का आभार जताया। बहनों ने सामायिक के साथ-साथ पंच प्रत्याख्यान, रात्रि भोजन का त्याग, एकासन, उपवास विगह वर्जन, जमीकंद का त्याग, पौषध प्रत्याख्यान भी किए।

रात्रिकालीन धम्म जागरण का आयोजन किया गया, जिसमें भाइयों ने अपने मधुर स्वर में गीतों से भक्ति का आनंद लिया।

डोंबिवली

तेयुप, डोंबिवली द्वारा आचार्य भिक्षु का चरमोत्सव स्थानीय भवन में मनाया गया। इस अवसर पर एक शाम भिक्षु बाबा के नाम धम्म जागरण का आयोजन हुआ। अनिता बड़ाला एवं करिश्मा कोठारी ने मंगलाचरण किया। दीपा नंदन संयोजिका हितेश हिरन ने स्वागत किया। ललित पुनमिया ने सामूहिक जाप करवाया।

सुरेश बैद ने तेरापंथ प्रबोध के पद्यों की अभिव्यक्ति दी। सभी संघीय संस्थाओं ने प्रस्तुतियाँ दी और वातावरण को भक्तिमय बना दिया। सभा अध्यक्ष गणपत हिंगड़ ने विचार रखे। सभा मंत्री जगदीश परमार, तेयुप अध्यक्ष ललित मेहता, मंत्री राहुल कोठारी सहित अनेक सदस्य एवं गणमान्यजन उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन रीना हिंगड़ ने किया। आभार संजय बड़ाला ने किया।

गांधीनगर

तेरापंथ भवन में मुनि अर्हत कुमार जी के सान्निध्य में २२०वाँ आचार्य भिक्षु चरमोत्सव दिवस का कार्यक्रम आयोजित हुआ। मुनिश्री ने कहा कि इतिहास उम्र के पैमानों से नहीं कर्तृत्व की तेजस्विता से बनता है। इतिहास उन्हीं का बनता है, जिसमें कुछ करिश्मा होता है। कलात्मक जीवन जीने का सलीका होता है। ऐसे ही एक करिश्माई व्यक्तित्व के धनी हुए—आचार्य भिक्षु। जिन्होंने विकट परिस्थितियों की परवाह किए बिना सत्य को जीया और उसी के प्रकाश से विश्व को प्रकाशित किया। क्रांति की जलती मशाल का नाम है—आचार्य भिक्षु। उन्होंने जैन धर्म को जन धर्म बनाने का अथक प्रयाय किया।

युवा संत मुनि भरत कुमार जी ने कहा कि उनकी साधना बहुत गहरी थी, उनका मंत्र बहुत चमत्कारी है। बाल संत मुनि जयदीप कुमार जी ने गीत का संगान किया।

सभा अध्यक्ष कमल सिंह दुगड़ ने सभी का स्वागत किया। महासभा कर्नाटक दक्षिण आंचलिक प्रभारी प्रकाश चंद लोढ़ा, महिला मंडल अध्यक्षा स्वर्ण माला पोखरणा, तेयुप अध्यक्ष प्रदीप चोपड़ा, अणुव्रत समिति मंत्री माणकचंद संचेती, निर्मल राजेश सिद्ध मूथा से पवन बंचावत, लता गादिया ने विचार व्यक्त किए। बहादुर सेठिया, रोहित कोठारी ने गीत की प्रस्तुति दी।

साहूकारपेट, चेन्नई

तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में और साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में २२०वें आचार्य भिक्षु चरमोत्सव के उपलक्ष्य में 'एक शाम भिक्षु के नाम' भजन संध्या का आयोजन किया गया। जिसमें हेमंत डूंगरवाल के निर्देशन में जय तुलसी संगीत मंडल ने एक से एक बढ़कर अपने संगीतमय भक्ति गीतों से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।

साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने आचार्यश्री भिक्षु के विराट व्यक्तित्व का चित्रण करते हुए कहा कि स्वामी जी के स्मरण मात्र से बड़े से बड़े विघ्नों का शमन हो जाता है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता तेरापंथी सभा के अध्यक्ष उगमराज सांड ने की। कार्यक्रम में सभा के सहमंत्री देवीलाल हिरण, महिला मंडल अध्यक्षा पुष्पा हिरण, तनसुखलाल नाहर, मनोज डूंगरवाल, संदीप मूथा, किशोर मंडल, कन्या मंडल प्रभारियों के साथ अनेक श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही। संचालन राहुल चोपड़ा ने किया। सभा मंत्री अशोक खतंग ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया।

आमेट

साध्वी प्रांजलप्रभा जी के सान्निध्य में आचार्य भिक्षु चरमोत्सव एवं 'एक शाम बाबा भिक्षु के नाम' कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी रुचिप्रभाजी एवं साध्वी गौतम प्रभाजी की सुमधुर गीतिका द्वारा किया गया।

साध्वी प्रांजलप्रभा जी ने कहा कि इतिहास बताता है लगभग २३६ वर्ष पहले विक्रम संवत् १७८३ आषाढ़ शुक्ल त्रयोदशी को कंटालिया की मरुधर धरा पर एक सूर्य उदित हुआ और देदीप्यमान जीवन जीने का संदेश देकर विलिन हो गया। साध्वीश्री जी ने आचार्य भिक्षु के मनोवैज्ञानिक, आचारनिष्ठा एवं गुणग्राही व्यक्तित्व की चर्चा करते हुए उनके कर्तृत्व की विस्तार से चर्चा की।

इस आयोजन में संस्था के अध्यक्ष देवेंद्र मेहता, मंत्री ज्ञानेश्वर मेहता, तेयुप मंत्री विपुल पितलिया, महिला मंडल अध्यक्ष मीना गेलड़ा, मंत्री संगीता पामेचा, वयोवृद्ध श्रावक मूलचंद बोलिया, मिश्रीलाल गांधी, महेंद्र सियाल, मनोहर लाल पितलिया, सहित अनेक सदस्यों ने संघीय भजनों द्वारा बाबा भिक्षु की आराधना की। कार्यक्रम में अनेक गणमान्यजन एवं श्रावक-श्राविका समाज की उपस्थिति रही। कार्यक्रम को सफल बनाने में मुकेश सुराणा का विशेष सहयोग रहा।

मदनगंज, किशनगढ़

तेरापंथ भवन में आचार्य भिक्षु का २२०वाँ भिक्षु चरमोत्सव त्याग, संयम, साधना के साथ मनाया गया। इस अवसर पर मुनि चैतन्य कुमार 'अमन' ने कहा कि दुनिया में अनेक प्रकार की क्रांतियाँ होती रही हैं, किंतु आचार्य भिक्षु ने धर्म और सत्य की सुरक्षा के लिए क्रांति की ओर इसी का परिणाम है—तेरापंथ। आज जो तेरापंथ धर्मसंघ जैन धर्म का पर्याय बन रहा है उसमें आचार्य भिक्षु का बलिदान बोल रहा है।

मुनि अमन कुमार जी ने कहा कि मारवाड़ का छोटा-सा गाँव सिरियारी, जहाँ २२० वर्ष पूर्व आचार्य भिक्षु ने बैठे-बैठे ही इच्छामृत्यु का वरण किया। वहाँ आज के दिन हजारों-हजारों की संख्या में देश के कोने-कोने से जैन-अजैन सभी उनकी समाधि पर अपनी श्रद्धा की अभिव्यक्ति व्यक्त करते हैं तथा जप, तप, उपवास आदि करते हैं।

मुनि सुबोध कुमार जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु कालजयी व्यक्तित्व के धनी थे। किशनगढ़ के साथ आचार्य भिक्षु का संबंध रहा है, लोग उसे भुला बैठे हैं। आचार्य भिक्षु किशनगढ़ में प्रवास से कुछ विरल घटनाएँ रही हैं। पूर्व रात्रि में धर्म जागरण करते हुए अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने भजनों का संगान करते हुए अपनी श्रद्धा की प्रस्तुति दी। पर्युषण के दौरान जिन्होंने तपस्या करी, उनको सम्मानित किया गया। प्रश्न-उत्तर कार्यक्रम में विशेष स्थान प्राप्त करने वालों को पुरस्कृत किया गया।

सन् २०२२ का ज्ञानशाला अवॉर्ड प्राप्तकर्ता ज्ञानार्थी जागृत गेलड़ा को विशेष सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संयोजन तेयुप मंत्री एवं महिला मंडल मंत्री करुणा जैन ने किया। ज्ञानशाला प्रभारी वंदना सुराणा, कुसुम घोड़ावत, जयश्री पींचा का विशेष सहयोग रहा।

विशाखापट्टनम्

मुनि दीप कुमार जी के सान्निध्य में आचार्य भिक्षु का २२०वाँ चरमोत्सव का आयोजन तेरापंथी सभा द्वारा किया गया। २४ घंटे का 'ॐ भिक्षु' का अखंड जप भी प्रारंभ हुआ। मुनि दीप कुमार जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु आलोक पुंज, तेज पुंज थे। जब तक वे संसार में रहे, तब तक संसार को आलोकित करते रहे। इससे भी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि स्वर्गवास के २१६ वर्षों के पश्चात भी वे आलोक पुंज बने हुए हैं, जो उन्होंने ज्ञान रश्मियाँ बिखेरी, पंथ दिखलाया, वह सबको आलोक दिखा रहा है।

मुनिश्री ने आगे कहा कि आचार्य भिक्षु आत्मार्थी महापुरुष थे। वे सब तरह की भौतिक एषणाओं से उपरत थे। उनका संपूर्ण जीवन महावीर वाणी पर समर्पित था। मुनिश्री ने जप अनुष्ठान भी कराया और स्वरचित गीत का संगान किया।

बाल मुनि काव्य कुमार जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु महान क्रांतिकारी थे। उन्होंने बहुत कष्टों को सहन किया। बालमुनि ने गीत का संगान किया। कार्यक्रम में तेरापंथी महासभा के कार्यसमिति सदस्य विमल कुंडलिया ने गीत की प्रस्तुति दी।

✦ *थोड़ा बोलो, पर सोचकर बोलो। देखो, वह कितना असरदार होता है।*
– आचार्यश्री महाश्रमण

आत्म दर्शन का महान पर्व - पर्युषण

अमराईवाड़ी-ओढव।

शासनश्री साध्वी सरस्वती जी के सान्निध्य में सिंघवी भवन में महापर्व पर्युषण का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

खाद्य संयम दिवस का कार्यक्रम साध्वीश्री जी के मंत्रोच्चार से प्रारंभ हुआ। साध्वीश्री जी ने कहा कि यह पर्व अनूठा प्रकाश लेकर आया है। यह पर्व तप, त्याग, संयम और उपासना का प्रेरक पर्व है। आत्मशुद्धि और आत्मसिद्धि का पर्व है।

खाद्य संयम दिवस पर साध्वी नंदिताश्री जी ने अपनी प्रस्तुति दी। इस दिवस पर सैकड़ों भाई-बहनों ने उपवास, एकासन आदि करके खाद्य संयम दिवस मनाया।

रात्रिकालीन कार्यक्रम में साध्वी सम्यक्प्रभा जी ने प्रस्तुति दी।

स्वाध्याय दिवस पर शासनश्री साध्वी सरस्वती जी ने कहा कि व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व को सँवारने में पुस्तकों का बड़ा योगदान है। स्वाध्याय प्रकाश की यात्रा है। जीवन की टूटती जिंदगी को सँवारता है—स्वाध्याय। आचार्य भारमलजी उत्तराध्ययन सूत्र का खड़े-खड़े स्वाध्याय करते थे। मुनि जीवराज जी, मुनि कपूरचंद जी जिन्हें ६०००० श्लोक कंठस्थ थे। साध्वी संवेगप्रभा जी ने दिवस के महत्त्व को उजागर करते हुए स्वाध्याय को अध्यात्म का प्रवेश द्वार बताया।

रात्रिकालीन कार्यक्रम में श्रावक समाज द्वारा प्रश्न पूछे गए, साध्वी संवेगप्रभा जी ने जिज्ञासाओं को शांत किया तथा भगवान शांतिनाथ का जीवन प्रस्तुत किया।

सामायिक दिवस पर साध्वीश्री जी ने कहा कि सामायिक के बिना आत्मा मोक्ष नहीं जा सकती। सामायिक का अर्थ समता में रहना ही नहीं, बल्कि सही अर्थ आत्मा के समीप जाना है। साध्वी नंदिताश्री जी ने अभिनव सामायिक करवाई।

रात्रिकालीन कार्यक्रम में साध्वी नंदिताश्री जी ने तपस्वी कोदरजी स्वामी के जीवनवृत्त को प्रस्तुत किया। सामायिक दिवस पर तीन सामायिक की पचरंगी हुई। दिन-भर में लगभग ६०० सामायिक संपन्न हुई।

वाणी संयम दिवस पर शासनश्री साध्वीश्री ने कहा कि हमारा वास्तविक धन क्या है?—संयम और साँसें। आपने कहा कि वाणी और पानी दोनों स्वस्थ होने चाहिए। आदमी की जुबान एक दुकान है, खोलने पर पता चलता है कि दुकान सोने की है या कोयले की। हमारे शब्द कंकर हैं या मोती। वाणी बाण न बने वीणा बने। साध्वी संवेगप्रभा जी ने कहा कि भाषा व्यक्तित्व का आइना है।

रात्रिकालीन कार्यक्रम में साध्वी नंदिताश्री जी ने तेरापंथ के इतिहास की घटनाओं की प्रस्तुति दी।

अणुव्रत चेतना दिवस पर साध्वीश्री जी ने आचार्य तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत आंदोलन का महत्त्व बताया। आपने कहा कि मलीन विचारधारा से व्यक्ति कहाँ पहुँच जाता है। साध्वी तरुणप्रभा जी ने अणुव्रत के नियमों को विस्तार से बताते हुए बारहव्रती श्रावक बनने की प्रेरणा दी।

रात्रिकालीन कार्यक्रम में साध्वी तरुणप्रभा जी द्वारा कर्मों की सत्ता को विस्तार से बताया।

जप दिवस पर साध्वीश्री जी ने २४ तीर्थंकरों के समवसरणों के बारे में प्रकाश डाला। भगवान महावीर और गौतम स्वामी के पूर्व भव के संबंध के बारे में बताया। साध्वी तरुणप्रभा जी ने जप को क्यों, कैसे, किस दिशा में करना चाहिए, आदि बिंदुओं पर प्रकाश डाला।

ध्यान दिवस पर साध्वीश्री जी ने जनमेदिनी के समक्ष देवलोक की ५ सभाओं का विस्तार से वर्णन किया। धर्मरुचि अणगार का जीवन प्रस्तुत किया। इस दिवस की महत्ता पर साध्वी परमार्थप्रभा जी ने प्रकाश डाला।

संवत्सरी महापर्व पर शासनश्री साध्वी सरस्वती जी ने कहा कि यह पर्व चेतना के अनावरण का पर्व है। ज्ञान-दर्शन, चरित्र की आराधना का पर्व है। आपने आगे कहा कि तीर्थंकर केवल ज्ञान प्राप्त करते हैं, तब नारकी में भी प्रकाश होता है उस प्रकाश को देख कई नारकी जीव भी सम्यक्त्वी बन जाते हैं। साध्वी संवेगप्रभा जी ने 'जैन धर्म के प्रभावक आचार्य' आचार्यश्री पट्टावली में आचार्य जम्मू और स्थुलीभद्र के जीवन चरित्र को प्रस्तुत किया। साध्वी तरुणप्रभा जी ने मंत्र और शरीर पर वर्णन किया। साध्वी नंदिताश्री जी ने तेरापंथ के आचार्य पट्टावली को व्याख्यायित किया। साध्वी परमार्थप्रभा जी ने चौबीसी आदि का संगान किया।

स्थानकवासी समाज ने भी आठों दिन हर कार्यक्रम में सक्रियता से भाग लिया। आठों दिन तक नवकार मंत्र का अखंड जप चला। तपस्या के क्रम में अमराईवाड़ी में एक लहर चल पड़ी, अनेक तपस्या और धर्मध्यान का अपूर्व ठाठ लगा रहा।

शासनश्री साध्वी सरस्वती जी के सान्निध्य में क्षमायाचना (खमतखामणा) का कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस अवसर पर साध्वीश्री जी ने कहा कि खमतखामणा का पर्व प्रतिवर्ष एक नया उल्लास लेकर आता है। यह पर्व निःशल्य होने का, तनावमुक्ति का सुंदरतम अवसर है। मैत्री और करुणा की भावना से भावित होने का है। साध्वीश्री जी ने कहा कि खमतखामणा भी करते रहें और आँखों में लाली रहे तो यह औपचारिक है। वास्तविक खमतखामणा वह है जिनके साथ मन-मुटाव है, बोलचाल बंद है, उनके साथ शुद्ध अंतःकरण से खमतखामणा करके निःशल्य बन जाना। पारस्परिक सौहार्द के धागे में बँध जाना।

साध्वी संवेगप्रभा जी ने गीतिका का संगान किया तथा सभी के प्रति क्षमायाचना की। साध्वी नंदिताश्री जी एवं साध्वी तरुणप्रभा जी ने क्षमायाचना का महत्त्व बताया। गुरुदेव के प्रति, शासनश्री के प्रति, सहवर्ती साध्वीवृंद और समस्त श्रावक समाज से क्षमायाचना की।

कार्यक्रम में सभा अध्यक्ष रमेश पगारिया, महिला मंडल मंत्री लक्ष्मी सिसोदिया, तेयुप अध्यक्ष हेमंत पगारिया, कन्या मंडल संयोजिका प्रियांसी हिरण, शशि ओस्तवाल, मुकेश सिंघवी, पुखराज कुकड़ा, शांतिलाल चपलोत, विनोद चलपोत एवं अन्य महानुभावों ने सभी के प्रति क्षमायाचना करते हुए भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन सभा के मंत्री गणपत हिरण ने किया। कार्यक्रम के प्रायोजक शंकरलाल, हेमंत, निलेश, कियांश पगारिया रहे। जिनका सभा द्वारा सम्मान किया गया। कार्यक्रम में लगभग ६०० सदस्यों की उपस्थिति रही।

नवग्रह शांति अनुष्ठान व सामूहिक आयंबिल तप आराधना

आमेट।

साध्वी प्रांजलप्रभा जी, साध्वी रुचिप्रभा जी, साध्वी गौतमप्रभा जी आदि के सान्निध्य में नवग्रह शांति अनुष्ठान व सामूहिक आयंबिल तप का आयोजन रखा गया। साध्वीश्री जी ने मंत्रों का लयबद्ध उच्चारण करा नवग्रह शांति अनुष्ठान पूर्ण किया।

साध्वीश्री ने प्रयोग कराकर बताया कि कैसे इन मंत्रों से एक विशेष ऊर्जा का संचार होता है। महिला मंडल द्वारा 'ॐ' की आकृति में बैठकर अनुष्ठान प्रारंभ किया गया।

इस अनुष्ठान में लगभग २५० श्रावक-श्राविकाओं व ज्ञानशाला के छोटे-छोटे बच्चों ने भाग लिया। इस अवसर पर महिला मंडल द्वारा सामूहिक आयंबिल तप का आयोजन तेरापंथ भवन में रखा गया, जिसमें १३१ श्रावक-श्राविकाओं ने आयंबिल तप की आराधना की।

इस आयोजन में तेरापंथ सभा, तेयुप, तेरापंथ कन्या मंडल, तेमम से अध्यक्ष मीना गेलड़ा, मंत्री संगीता पामेचा, सुधा मेहता, जतन देवी बम्ब, गजराबाई बाफना, उमा हिरण और श्रावक समाज की अच्छी उपस्थिति रही।

५१ की तपस्या का किया प्रत्याख्यान

कोटा।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में अणुव्रत भवन में तपस्विनी बहन पिंकी जैन के तपस्या के उपलक्ष्य में तेरापंथी सभा कोटा में अनुमोदना का कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम से पूर्व तपस्विनी बहन का भव्य बरघोड़ा निकाला गया। धरती-अंबर को गुंजायमान करने वाली शोभायात्रा जन-जन के लिए आकर्षण का केंद्र बन गई। विराट जुलूस के साथ तपस्विनी बहन कार्यक्रम स्थल, अणुव्रत भवन में पहुँची।

साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि अंधकार से प्रकाश की यात्रा का नाम है—तपस्या। मृत्यु से अमरत्व की ओर बढ़ने वाले कदम का नाम है—तपस्या। असत्य से सत्य की ओर उठने वाली तरंग का नाम है—तपस्या। पिंकी जैन ने हमारी प्रेरणा को स्वीकार करा तप के महापथ पर गतिमान हुई और आज इक्यावन के तप का प्रत्याख्यान कर रही हैं। गुरुवर की दिव्य ऊर्जा, आत्मिक मनोबल, दृढ़-संकल्प बल एवं पारिवारिक जन के सहयोग से पिंकी इस मुकाम तक पहुँच गई है जो सोचा वह कर दिखलाया। तप के पथ पर बढ़े ये कदम हमेशा बढ़ते रहें। तुम अपने संकल्प बल से कीर्तिमान रचती रहना।

राजूलाल, संजय, नीरज का पूरा परिवार कोटा में साधुवाद का पात्र है, जिनके सहयोग से पिंकी ने कोटा में इतिहास रचाया है। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी के संदेश का वाचन कोटा सभा के मंत्री धरमचंद जैन ने किया। साध्वी कर्णिकाश्री जी, साध्वी सुधाप्रभा जी, साध्वी समत्वयशा जी एवं साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने गीत का मधुर संगान किया।

सभाध्यक्ष संजय बोथरा, पूर्व अध्यक्ष रतनलाल जैन, महिला मंडल उषा बाफना, तेयुप मंत्री कमलेश जैन, टीपीएफ से आशीष जैन, अणुव्रत समिति के मंत्री भूपेंद्र जैन, जैन राष्ट्रीय पोरवाल संघ के अध्यक्ष छगन जैन, राष्ट्रीय पोरवाल महिला मंडल की मंत्री डॉ० रेखा जैन, पोरवाल समाज इंदौर के भामाशाह हनुमान प्रसाद जैन, राजूलाल जैन ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। तेमम ने गीत का संगान किया।

ध्वनि, अक्षिता, मोहक ने अपनी मम्मी को तप की बधाई गीत के माध्यम से संप्रेषित की। बहन सुधा, मंजु, अर्चना, ज्योति ने भाभी नीमा-मिथलेश ने आयुषी, मानवी, नेहा ने गीत के माध्यम से अभ्यर्थना की। मंजु जैन ने अपने उद्गार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने किया।

१००८ एकासन का महा अनुष्ठान

गांधीनगर, बैंगलोर।

तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में मुनि अर्हत कुमार जी के सान्निध्य में पहली बार १००८ एकासन का महा अनुष्ठान का आयोजन हुआ।

मुनि अर्हत कुमार जी ने कहा कि जीवन को सुनहरी भोर की स्वर्णिम किरण के समान निखारने के लिए उसमें नूतन आभा के साथ नई ऊर्जा का संचारक करने के लिए आत्मा के असली सौंदर्य को उजागर करने के लिए अनेक प्रकार के तपानुष्ठानों का सूत्र में वर्णन मिलता है। एकासन सामूहिक तप का एक प्रकार है। एकासन एक समय एक घंटे में होने वाला यह तप संयम की साधना का विलक्षण उपक्रम है।

सहयोगी संत मुनि भरत कुमार जी ने कहा कि सामूहिक तप करने से सामूहिक कर्मों की निर्जरा होती है। निर्जरा होने से आत्मा सुख-शांति व आनंद को प्राप्त होती है। ऐसे अनुष्ठान समय-समय पर होने से बैंगलुरु में नई ऊर्जा प्राप्त होती है। बाल संत मुनि जयदीप कुमार जी ने उद्बोधन दिया। प्रेक्षा संगीत सुधा व सुधा जैन ने गीतों का संगान किया। कार्यक्रम में तेरापंथ सभा अध्यक्ष कमल दुगड़ ने स्वागत भाषण दिया। तेमम की अध्यक्षा स्वर्णमाला पोखरना ने एकासन करने वाले को धन्यवाद दिया। संगठन मंत्री धर्मेश कोठारी ने आभार ज्ञापन किया।

अनुष्ठान को सफल बनाने में तेरापंथ सभा, महिला मंडल, तेयुप व श्रावक-श्राविकाओं का विशेष श्रम रहा। इस अवसर पर विशिष्ट जन, पदाधिकारीगण, कार्यकारिणी सदस्य एवं श्रावक समाज की उपस्थिति रही।

पर्युषण महापर्व का आयोजन

शिवकाशी।

पर्युषण पर्व धर्म आराधना कराने हेतु तीन उपासिका बहनें संतोष, विमला एवं सरोज बाई पधारी। उन्होंने सातों दिन का महत्त्व बताया एवं गुरुओं की आगमवाणी कथाओं के माध्यम से बताई। सुबह व शाम दोनों समय प्रवचन चला। शाम को सभी बहनें सामूहिक प्रतिक्रमण करती, दोपहर में कायोत्सर्ग और प्रेक्षाध्यान का क्रम चला। २ दस प्रत्याख्यान हुए। जप दिवस के उपलक्ष्य में अखंड जप चला। अभिनव सामायिक एवं नाटक ने हवा में धर्म घोल दिया।

परिवार में कैसे रहें, मौन व बोलने के बीच का रास्ता है—वाणी संयम। ऐसी कई सामान्य जीवन में उपयोग आने वाली बातें बताई। प्रत्येक आचार्य की जीवनी सुनाई। हमें हमेशा पॉजिटिव रहना चाहिए, इसके लिए खास मंत्र दिए। क्षमापना दिवस का कार्यक्रम अच्छे से संपन्न हुआ। सभी ने आपस में और पधारी बहनों से खमतखामणा की। महिला मंडल ने उपासिका बहनों का आभार व्यक्त किया। दिव्या आंचलिया ने सातों दिन कार्यक्रम का संचालन किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
24 - 30 अक्टूबर, 2022

✦ *जीवन में एक संकल्प ऐसा रखो, जिसे रखने के लिए तुम अपने प्राणों का भी अर्पण कर सको।*

–आचार्यश्री महाश्रमण

आत्मा के आसपास

❑ **आचार्य तुलसी** ❑

प्रेक्षा : अनुप्रेक्षा

स्वयं सत्य खोजें

प्रयोग शुरू करते ही जो राहत मिलती है, मेरी दृष्टि से वह तात्कालिक लाभ है। आगम की भाषा में वह बीमारी का उपशम हुआ, क्षय नहीं। उपशम उपशम है वह कभी भी उभर सकता है। क्षय में बीमारी का अस्तित्व समाप्त हो जाता है। उपशम से ही संतुष्ट होकर पुनः लापरवाह हो जाना, एक प्रकार से धोखा खाना है। क्योंकि ऊपर-ऊपर से उपशम और क्षय की अवस्था एक समान दिखाई देती है, पर दोनों में अंतर बहुत है।

मोहकर्म का उपशम भी होता है और क्षय भी। उपशम ग्यारहवें गुणस्थान में होता है और क्षय बारहवें गुणस्थान में। इन दोनों ही गुणस्थानों में कषाय शांत रहता है, यथाख्यात चारित्र रहता है। फिर भी इन दोनों में एक बड़ा अंतर है। ग्यारहवें गुणस्थान में उपशांत हुआ कषाय अंतर्मुहूर्त के बाद फिर उभरता है और उससे साधक का पतन निश्चित है। बारहवें गुणस्थान में कषाय क्षीण हो जाता है, इसलिए वहाँ पतन की संभावना समाप्त है। साधक आगे बढ़ता है और केवलज्ञान प्राप्त कर लेता है।

मैं शिविर के साधकों को सूचित करना चाहता हूँ कि दस दिन की साधना से आपको जो लाभ मिला है, वह उपशम है। खाद्य संयम और नियमित चर्या–इन दो कारणों से वृत्तियों, विचारों और स्वास्थ्य में सुधार हुआ है। उत्तेजना कम हुई है। आलस्य की मात्रा घटी है। अनपेक्षित नींद उड़ी है। किंतु साधना का क्रम टूटा कि ये सब चीजें पुनः उभर सकती हैं। इसलिए साधना-क्रम को स्थायी बनाकर क्षायिक भाव की स्थिति प्राप्त करनी है।

शिविर-काल में साधकों को जो कुछ सिखाया गया है, वह एक प्रकार का पथ-दर्शन है। अब उसके आधार पर अपनी-अपनी क्षमता के अनुसार नए प्रयोग करते रहना चाहिए क्योंकि जीवन-भर, मार्ग-दर्शन देना गुरु का काम नहीं है। वे जब तक आवश्यक समझते हैं, पथ दिखाते हैं, फिर शिष्य को स्वयं अपनी मंजिल तय करने के लिए छोड़ देते हैं।

एक शिष्य ने वर्षों तक गुरु की सन्निधि में रहकर साधना की। जब उसका अभ्यास परिपक्व हो गया तो गुरु ने उसको घर जाने की अनुमति दे दी। शिष्य विनत भाव से बोला–'गुरुदेव! मैं जा रहा हूँ, मेरा मार्ग-दर्शन कीजिए।' गुरु ने हाथ में प्रज्वलित दीपक लिया और बोले–'चलो, शिष्य! मैं तुझे रास्ता दिखाता हूँ।' गुरुकुल के द्वार तक गुरु उसका हाथ अपने हाथ में लेकर चले। शिष्य ने द्वार से बाहर कदम रखा और गुरु ने उसका हाथ छोड़ दिया। हाथ छोड़ते ही उन्होंने दीपक भी बुझा दिया और वापस मुड़ने लगे। शिष्य इस स्थिति से घबराकर बोला–'गुरुदेव! यह क्या? न आप साथ चल रहे हैं, न हस्तावलंबन दे रहे हैं और न किसी अन्य सहायक को मेरे साथ भेज रहे हैं। इससे भी आगे की बात कहूँ तो आपने दीपक भी बुझा दिया है। अब मैं इस अंधेरे में अपना पथ कैसे देख सकूँगा?' गुरु एक मीठी मुस्कान बिखेरते हुए बोला–'शिष्य! जाओ, अपना रास्ता स्वयं खोजो, और किसी को साथ रखने की बात छोड़कर स्वयं को साथ रखो। विकास का रास्ता बना-बनाया नहीं होता। वह फूलों से भरा भी नहीं होता। उस काँटों-भरे बीहड़ रास्ते पर निष्ठा और दृढ़ संल्प के साथ चलने वाला निश्चित रूप से मंजिल पा लेता है। तुम मुझे भूल जाओ और निर्भय होकर आगे बढ़ते रहो। तुम्हारा पथ स्वयं प्रशस्त होता रहेगा।'

मैं भी यहाँ उपस्थित सभी शिविर-साधकों से कहना चाहता हूँ कि आप स्वयं समर्थ हैं, सब कुछ कर सकते हैं, फिर स्वयं को दुर्बल क्यों बना रहे हो? आप भूल जाइए इस बात को कि सत्य की खोज हम क्या करें, उसे तो तीर्थंकरों ने पहले ही खोज लिया। हम क्यों प्रयत्न करें? हमारे पूज्य अर्हतों ने जो कुछ खोजा और पाया, हम तो उसी के सहारे चलते रहेंगे। आप सोच सकते हैं किंतु मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि तीर्थंकरों ने कितना ही कुछ खोज लिया हो; आपकी खोज बाकी है। आपके सामने तो अभी भी सघन तिमिर है। आप प्रयत्न करें, किसी के खोजे हुए सत्य पर रुकें नहीं, वह आपके काम नहीं आएगा। आपको अपने पुरुषार्थ से खोज करनी है, इसलिए मैं फिर कहता हूँ कि आप स्वयं सत्य खोजें।

'अप्पणा सच्चमेसेज्जा' आप स्वयं सत्य खोजें, यह बात मैं नहीं कह रहा हूँ। और कोई साधारण व्यक्ति नहीं कह रहा है। यह बात उन्होंने कही है जिन्होंने सत्य खोज लिया है, सत्य को पा लिया है। उन्होंने कहा–'हमने जो खोजा है वह तुम्हारे लिए बासी है। बासी भोजन करना समझदारी नहीं है, इसलिए अपने पुरुषार्थ से ताजा भोजन तैयार करो और उससे विशेष पोषण प्राप्त करो।

यह बात भगवान महावीर ने कही। उनका संकेत था–'मइमं पास' प्रज्ञा-पुरुषो! तुम मेरी बात पर रुको मत, उससे आगे जो कुछ है, उसे देखो। भगवान बुद्ध ने कहा–'परीक्ष्य भिक्षवो ग्राह्यं मद्वचः न तु गौरवात्' भिक्षुओ! मैंने जो कुछ कहा है, उसकी परीक्षा करने के लिए ही उसे ग्रहण करो। बुद्ध ने कह दिया, इस गुरुता के भाव से उसे ग्रहण करने की जरूरत नहीं है।

आचार्य भिक्षु ने अपने शिष्यों को संबोधित कर कहा–साधुओ! मैंने जो कुछ कहा है, उसे अंतिम मत मानो। अपनी समझ और बुद्धि को काम में लो, अपनी क्षमता से खोज करो। संभव है तुम्हें कोई इससे भी अच्छा रास्ता उपलब्ध हो जाए। एक बार उनके शिष्यों ने उनसे पूछा–'गुरुजी! आप हमारी आस्था के केंद्र हैं, आप हमें बहुत अच्छे साधु प्रतीत होते हैं। पर हम आपसे पूछना चाहते हैं कि आपसे भी अधिक साधु मिल जाए तो आप क्या करेंगे? उन्होंने बिना एक क्षण सोचे शिष्यों से कहा–'यदि वे मुझसे बड़े होंगे तो मैं उनके चरणों में लोट जाऊँगा और छोटे होंगे तो अपनी छाती से लगा लूँगा।'

कितना ऋतु दृष्टिकोण है यह, सत्य की खोज का। उन्होंने हमको असांप्रदायिक धर्म का दृष्टिकोण दिया। उन्होंने कहा–यह जरूरी नहीं है कि जैन कहलाने वाला ही तरेगा या तेरापंथी कहलाने वाला ही तरेगा। जिस व्यक्ति को सत्य मिल गया, वह जैन और तेरापंथी न होने पर भी निश्चित रूप से तरेगा। उनके इसी उदार दृष्टिकोण की फलश्रुति है कि उन्होंने मिथ्यादृष्टि के सत्य को भी सत्य कहकर गाया, उसकी सत्प्रवृत्तियों को भगवान की आज्ञा में बताया। हम आज भी उनके बहुत-बहुत आभारी हैं, जिनसे हमें सत्यशोध का ऐसा ऋजु दृष्टिकोण मिला है।

इस दृष्टि से मैं शिविर-साधकों को कहना चाहता हूँ कि आप सदा-सदा मार्गदर्शन की अपेक्षा न रखें। मैं फिर कहता हूँ–आप स्वयं सत्य खोजें, स्वयं प्रयोग करें, संभव है आपको कोई नया सत्य मिल जाए। इसलिए आप रुको मत, चलते चलो, स्वयं सत्य खोजो और उसका साक्षात्कार करो। सत्य की मिठास जिसे उपलब्ध हो जाती है, वह उसे कभी छोड़ नहीं सकता। पर इसके लिए साधना की गहराई में उतरना है। गहराई में उतरने बिना झूठी समझदारी का चोगा पहनकर व्यक्ति किसी को धोखा तो दे सकता है, पर सत्य को नहीं पा सकता।

(क्रमशः)

साँसों का इकतारा

❑ **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा** ❑

(१००)

अनजाने से बीहड़ पथ में
हाथ पकड़ चलना सिखलाया।
वंदन उसे हमारा जिसने
तम में भास्वर दीप जलाया।।

अंतस की निर्मल ममता ने
रिसते जखमों को सहलाया
पतझर को ऋतुराज बनाने
नई बहारें लेकर आया
खंड-खंड में बिखरे सच को
एक साथ जिसने समझाया
अस्थिर मूल्यों के संकट में
मानवता का मोल बढ़ाया
हर प्रभात में जिसने शाश्वत
जिनवाणी - संदेश सुनाया।।

सूनी-सूनी राहों में जिसने
गुमराहों को संभाला
देख जिसे सबकी आँखों में
उतरा अनायास उजियाला
जीवन में संगीत-लहरियाँ
हुईं तरंगित जिसको सुनकर
जिसका पावन परस प्राप्त कर
चंदन बनी चित्त की ज्वाला
नए-नए सपने संजोकर
जिसने नव इतिहास बनाया।।

जिस जीवन का हर अगला पल
देखा सफल सकल इस जग ने
जिसका आश्रय पाकर गति की
नभ में बिना पाँख के खग ने
तपःपूत जो शांतिदूत जो
देवदूत-सा जो मनमोहक
मंजिल तक पहुँचाया सबको
जिसके निर्देशित हर मग ने
मधुर जागरण की वेला में
सपनों का संसार बसाया।।

मरु के सूखे अंचल में है
अंतःसलिला की जो धारा
मझधार में अटकी-भटकी
हर नौका के लिए किनारा
खिल जाती अलसाई कलियाँ
जिसके पावन दर्शन पाकर
जीवन में पुलकन भर देता
केवल जिसका मौन इशारा
जिसके आश्वासन से मन का
पोर-पोर थिरका हुलसाया।।

(क्रमशः)

संबोधि

❑ आचार्य महाप्रज्ञ ❑

बंध-मोक्षवाद

मिथ्या-सम्यग्-ज्ञान-मीमांसा

भगवान् प्राह

(३४) पञ्चमासिकपर्याय, आत्मध्यानरतो यतिः।
सूर्यचन्द्रमसोरेव, तेजोलेश्यां व्यतिव्रजेत्।।

पाँच मास का दीक्षित आत्म-लीन मुनि ज्योतिष्क देवों के इंद्र—चाँद और सूरज के सुखों को लाँघ जाता है।

(३५) षाण्मासिकपर्याय, आत्मध्यानरतो यतिः।
सौधर्मेशानदेवानां, तेजोलेश्यां व्यतिव्रजेत्।।

छह मास का दीक्षित आत्म-लीन मुनि सौधर्म और ईशान देवों के सुखों को लाँघ जाता है।

(३६) सप्तमासिकपर्याय, आत्मध्यानरतो यतिः।
सनत्कुमारमाहेन्द्र-तेजोलेश्यां व्यतिव्रजेत्।।

सात मास का दीक्षित आत्म-लीन मुनि सनत्कुमार और माहेन्द्र देवों के सुखों को लाँघ जाता है।

(३७) अष्टमासिकपर्याय, आत्मध्यानरतो यतिः।
ब्रह्मलान्तकदेवानां, तेजोलेश्यां व्यतिव्रजेत्।।

आठ मास का दीक्षित आत्म-लीन मुनि ब्रह्म और लान्तक देवों के सुखों को लाँघ जाता है।

(३८) नवमासिकपर्याय, आत्मध्यानरतो यतिः।
महाशुक्र-सहस्रार-तेजोलेश्यां व्यतिव्रजेत्।।

नौ मास का दीक्षित आत्म-लीन मुनि महाशुक्र और सहस्रार देवों के सुखों को लाँघ जाता है।

(३९) दशमासिकपर्याय, आत्मध्यानरतो यतिः।
आनतादच्युतं यावत्, तेजोलेश्यां व्यतिव्रजेत्।।

दस मास का दीक्षित आत्म-लीन मुनि आनत, प्राणत, आरण और अच्युत देवों के सुखों को लाँघ जाता है।

(४०) एकादशमासगत, आत्मध्यानरतो यतिः।
ग्रैवेयकाणां देवानां, तेजोलेश्यां व्यतिव्रजेत्।।

ग्यारह मास का दीक्षित आत्म-लीन मुनि नव ग्रैवेयक देवों के सुखों को लाँघ जाता है।

(क्रमशः)

अवबोध

❑ मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ❑

धर्म बोध

शील धर्म

प्रश्न १२ : एक बार मैथुन सेवन से गर्भ में कितने जीव उत्पन्न हो सकते हैं?

उत्तर : एक बार मैथुन सेवन से एक, दो, तीन से लेकर नौ लाख समनस्क जीव गर्भ में उत्पन्न हो सकते हैं। यह तथ्य तो अब विज्ञान द्वारा भी परीक्षित हो चुका है। यह सही है कि ये गर्भगत जीव पूरा विकास नहीं कर पाते, अधिकांश तत्काल मर जाते हैं।

प्रश्न १३ : मैथुन सेवन करने वाले पुरुष के किस प्रकार का असंयम (हिंसा) होता है?

उत्तर : एक पुरुष रुई की नली में या बूर की नली में तपी हुई शलाका डाल कर उसे विध्वंस करता है। मैथुन सेवन करने वाले का असंयम (हिंसा) भी ऐसा ही होता है।

प्रश्न १४ : क्या पूरे जीव जगत् को मैथुन सेवन का पाप लगता है?

उत्तर : नारक, पाँच स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय, अमनस्क मनुष्य व तिर्यंच पंचेन्द्रिय को मैथुन सेवन का पाप नहीं लगता, क्योंकि इनमें नपुंसक वेद होता है। शेष जीवों में मैथुन सेवन की प्रवृत्ति होने से पाप लग सकता है।

प्रश्न १५ : क्या समलैंगिक मैथुन सेवन से भी ब्रह्मचर्य का विनाश होता है?

उत्तर : समलैंगिक मैथुन सेवन अप्राकृतिक मैथुन की संज्ञा में है। इससे भी शील का विनाश होता है। इस अप्राकृतिक मैथुन से विरत रहने वाले व्यक्ति को न केवल आध्यात्मिक लाभ मिलता है, अपितु 'एड्स' जैसे जानलेवा रोगों से सहज ही बचा जा सकता है।

(क्रमशः)

उपासना

(भाग - एक)

❑ आचार्य महाश्रमण

आचार्य भिक्षु

वि०सं० १८०८ मार्गशीर्ष कृष्णा बारस को भीखणजी ने आचार्य रघुनाथजी के पास दीक्षा ग्रहण की। संत भीखणजी की दृष्टि पैनी और मेधा सूक्ष्मग्राही थी। तत्त्व की गहराई में पैठना उनके लिए स्वाभाविक बात थी। थोड़े ही वर्षों में वे जैन शास्त्रों के पारगामी पंडित बन गए।

वि०सं० १८१५ के आसपास संत भीखणजी के मस्तिष्क में साधु वर्ग की आचार-विचार संबंधी शिथिलता के प्रति एक क्रांति की भावना पैदा हुई। उन्होंने अपने क्रांतिपूर्ण विचारों को आचार्य रघुनाथजी के सामने रखा। दो वर्ष तक विचार-विमर्श होता रहा। जब कोई संतोषजनक निर्णय नहीं हुआ तब विचारभेद के कारण वि०सं० १८१७ चैत्र शुक्ला नवमी को कुछ साधुओं सहित बगड़ी (मारवाड़) में उनसे पृथक् हो गए। उनकी धर्मक्रांति का विरोध हुआ। चूँकि उस समय पूज्य रघुनाथजी का प्रभाव प्रबल था। इसलिए लोगों ने भीखणजी का असहयोग किया। ठहरने के लिए स्थान नहीं दिया। वहाँ से विहार किया। गाँव के बाहर आए कि तेज आँधी आ गई। 'इतो व्याघ्रस्ततस्तटी' वाली कहावत घटित हो गई। पीछे गाँव में जगह नहीं, आगे आँधी ने रास्ता रोक लिया। इसलिए उन्होंने अपना पड़ाव गाँव के बाहर श्मशान में जैतसिंहजी की छतरियों में किया। आज भी वे छतरियाँ विद्यमान हैं।

संघ-बहिष्कार के साथ ही आचार्य भिक्षु पर जैसे विरोधों के पहाड़ टूट पड़े। पर वे लौहपुरुष थे। विरोधों के सामने झुकना उन्होंने सीखा नहीं था। वे सत्य के महान उपासक थे। सत्य के लिए प्राण न्योछावर करने के लिए भी वे तत्पर थे। उन्हीं के मुख से निकले हुए शब्द—'आत्मा रा कारज सारस्यां, मर पूरा देस्यां', सत्य के प्रति अगाध समर्पण के सूचक हैं। वे महान् आत्मबली और अतुल साहसी थे। जैनागमों में वर्णित आचार-विचार के आधार पर वे जीवन में शुद्ध साधुता को प्रतिष्ठित करना चाहते थे। वि०सं० १८१७ आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा को केलवा (मेवाड़) में अपने साथियों सहित उन्होंने शास्त्र सम्मत दीक्षा ग्रहण की। यही तेरापंथ स्थापना का प्रथम दिन था। इसी दिन आचार्य भिक्षु के नेतृत्व में एक सुसंगठित साधु संघ का सूत्रपात हुआ और वह संघ तेरापंथ के नाम से प्रख्यात हो गया।

वि०सं० १८१७ से लेकर वि०सं० १८३१ तक पंद्रह वर्ष का जीवन आचार्य भिक्षु का महान् संघर्षमय रहा। यहाँ तक कहा जाता है कि उन्हें पाँच वर्ष तक पेट भर आहार बहुत कम मिलता। कभी मिलता, कभी नहीं भी मिलता। इस महान् संघर्ष की स्थिति में आचार्य भिक्षु ने कठोर साधना, तपस्या, शास्त्रों का गंभीर अध्ययन एवं संघ की भावी रूपरेखा का चिंतन किया।

वि०सं० १८३२ में आचार्य भिक्षु ने अपने प्रमुख शिष्य भारमलजी को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। उसी समय संघीय मर्यादाओं का भी निर्माण किया। उन्होंने पहला मर्यादा पत्र इसी वर्ष मार्गशीष कृष्णा सप्तमी को लिखा। उसके बाद समय-समय पर नई-नई मर्यादाओं के निर्माण से संघ को सुदृढ़ करते रहे। उन्होंने अंतिम मर्यादा पत्र लिखा सं० १८५६ माघ शुक्ला सप्तमी को। एक आचार्य में संघ की शक्ति को केंद्रित कर उन्होंने सुदृढ़ संगठन की नींव डाली। इससे अपने-अपने शिष्य बनाने की परंपरा का विच्छेद हो गया। भावी आचार्य के मनोनयन का दायित्व भी उन्होंने वर्तमान आचार्य को सौंपा। आज तेरापंथ धर्मसंघ अनुशासित, मर्यादित और व्यवस्थित धर्मसंघ है, इसका श्रेय आचार्य भिक्षु कृत इन्हीं मर्यादाओं को है।

आचार्य भिक्षु ने अपने मौलिक चिंतन के आधार पर नए मूल्यों की स्थापना की।

आचार्य भिक्षु की अहिंसा सार्वभौमिक थी। बड़ों के लिए छोटों की हिंसा व पंचेन्द्रिय जीवों की सुरक्षा के लिए एकेन्द्रिय प्राणियों का हनन आचार्य भिक्षु की दृष्टि में आगम-सम्मत नहीं था।

अध्यात्म व व्यवहार की भूमिका भी उनकी भिन्न थी। उन्होंने कभी और किसी भी प्रसंग पर दोनों को एक तुला से तौलने का प्रयत्न नहीं किया। उनके अभिमत से व्यवहार व अध्यात्म को सर्वत्र एक कर देना घी और तंबाकू के सम्मिश्रण जैसा अनुपादेय है।

(क्रमशः)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
24 - 30 अक्टूबर, 2022

✦ *अव्यवस्थित दस काम करने की अपेक्षा दो-तीन व्यवस्थित काम करना ज्यादा लाभदायी हो सकता है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

पर्वाधिराज पर्युषण आत्म मंथन का पर्व है

कोटा।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में गुमानपुरा स्थित अणुव्रत भवन में पर्युषण महापर्व का प्रथम दिन खाद्य संयम दिवस के रूप में आयोजित हुआ।

साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि आज जैन समाज का कुंभ मेला प्रारंभ हुआ है। आठ दिन तक चलने वाले इस कुंभ मेले में जप, तप, त्याग, सामायिक, स्वाध्याय, ध्यान, प्रतिक्रमण के द्वारा अपनी आत्मा को उज्ज्वल, पावन व पवित्र बनाएँ।

साध्वी कर्णिकाश्री जी ने कहा कि यह प्रमाद को छोड़कर अप्रमाद की त्रिपथगा में अवगाहन करने का समय है। साध्वी डॉ० सुधाप्रभा जी ने कहा कि भोजन ऊर्जा है, भोजन शक्ति है, भोजन गति है, भोजन के बिना व्यक्ति ऊर्जा संपन्न एवं शक्तिशाली नहीं बन सकता। जीवन के लिए भोजन जरूरी है पर खाने का संयम होना चाहिए। खाद्य संयम के विशेष प्रयोग करें।

साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने मंच संचालन किया। साध्वी समत्वयशा जी ने महावीर वाणी का रसपान कराया। सभा अध्यक्ष संजय बोथरा, मंत्री धर्मचंद जैन, महावीर हीरावत ने मंगल संगान किया। कमलेश जैन ने जप अनुष्ठान के बारे में सूचित किया।

स्वाध्याय दिवस पर साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि दिमाग को दुरुस्त बनाए रखने वाला महत्त्वपूर्ण टॉनिक है—स्वाध्याय मस्तिष्क को सक्रिय बनाए रखने वाली रामबाण दवा है—स्वाध्याय आत्मारूपी दीपक की बाती है—स्वाध्याय जीवनरूपी पोथी के गूढ़ रहस्यों को स्वाध्याय के द्वारा ही जाना जा सकता है।

साध्वी कर्णिकाश्री जी ने अपने विचार प्रस्तुत किए। साध्वी डॉ० सुधाप्रभा जी ने कविता की मंत्रमुग्ध प्रस्तुति दी। साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने संचालन किया। साध्वी समत्वयशा जी ने आगमवाणी का वाचन करवाया। महिला मंडल ने गीत का संगान किया। रचना सेठिया, कमलेश जैन ने जप की जानकारी दी। धर्मचंद जैन ने पोरवाल समाज को आगे बढ़ने का आह्वान किया।

वाणी संयम दिवस पर साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि वाणी संयम का एक रूप मौन भी है। मौन अपने आपमें शक्ति का भंडार है। मौन से प्राण शक्ति पुष्ट बनती है। नई ताजगी व नई स्फूर्ति का दर्शन होता है। वाणी संयम का दूसरा रूप है—विवेकपूर्वक बोलना। जो व्यक्ति कम बोलता है, सोचकर बोलता है, मधुर बोलता है, वह सबके दिलों में अपना स्थान बना लेता है।

साध्वी समत्वयशा जी ने वाणी संयम दिवस पर गीत का संगान किया। तेयुप साथियों ने मधुर स्वर में मंगल संगान किया। कोलकाता से समागत अभिषेक गोयल ने अपने उद्गार व्यक्त किए।

साध्वीश्री जी ने कहा कि समाज भूषण बिशन दयाल गोयल का परिवार संस्कारी परिवार है। कल्याण मित्र की स्व० कैलाश गोयल, राज गोयल व पुत्र अभिषेक गोयल बड़े श्रद्धाशील व उनकी पत्नी निधि एवं पुत्री कास्वी भी इस रंग में रंग रही हैं। विले पार्ले में इनको निरंतर सय्यातर का लाभ प्राप्त होता है। सभा अध्यक्ष संजय बोथरा, धर्मचंद जैन, तेयुप अध्यक्ष आनंद दुगड़ और अणुव्रत समिति के अध्यक्ष अशोक दुगड़ ने अभिषेक गोयल का सम्मान किया। महिला मंडल अध्यक्ष उषा बाफना व तेयुप मंत्री कमलेश जैन ने जप की जानकारी दी।

अणुव्रत चेतना दिवस पर साध्वीश्री जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ के नवम् अधिशास्ता आचार्य तुलसी ने एक मानव धर्म की कल्पना की। उन्होंने देश की आजादी की घोषणा के साथ ही एक घोष दिया था—'असली आजादी अपनाओ' उन्होंने अपनी दूरदर्शी सोच के साथ एक ऐसे आंदोलन की शुरुआत की, जो मानव को मानवता से जोड़ने का शंखनाद था। वो अणुव्रत आंदोलन के नाम से विख्यात हुआ।

साध्वी डॉ० सुधाप्रभा जी ने कहा कि आचार्य तुलसी जानते थे प्राचीन भारत चरित्र संपन्न राष्ट्र था। चरित्र संपन्नता व नीति-निष्ठा की बात अतीत का पृष्ठ बनकर न रह जाए। वर्तमान में भी निति-निष्ठा जीवंत होनी चाहिए।

कन्या मंडल ने गीत का संगान किया। साध्वी समत्वयशा जी ने आगमवाणी का रसपान करवाया। साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने संचालन किया।

जप दिवस पर साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि जप आत्म अनुभव को जागृत करने का अमोध साधन है। कहा जा सकता है कि अध्यात्म की शक्ति से रूबरू होने का सरलतम उपाय है—जप। जप अनुष्ठान से व्यक्ति के भीतर के केंद्र सक्रिय हो जाते हैं। अपने आराध्य के प्रति सर्वात्मना समर्पित बनकर पवित्र भावों से जप करना चाहिए।

साध्वी डॉ० सुधाप्रभा जी ने कहा कि पर्युषण का यह समय प्रभुमय बनने का समय है। साध्वी समत्वयशा जी ने जप दिवस पर गीत की प्रस्तुति दी। साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने संचालन किया। ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं ने मंगल संगान की प्रस्तुति दी।

साध्वी कर्णिकाश्री जी ने भावों की प्रस्तुति दी। इस अवसर पर वृहद संख्या में तेरापंथ श्रावक समाज उपस्थित हुआ।

संवत्सरी महापर्व पर साध्वीश्री जी ने कहा कि संवत्सरी महापर्व जैनों का प्राणपर्व है। यह आत्मावलोकन एवं आत्ममंथन का महापर्व है। यह ऋजुता एवं मृदुता का महापर्व है। संवत्सरी महापर्व क्षमा व समता के सुमनों से जीवन बगिया को हल्का सुवासित करने का पर्व है। राग-द्वेष की गाँठों को खोलकर आत्मा को हल्का बनाने का महापर्व है। साध्वीश्री जी ने कहा कि हर व्यक्ति आज के दिन यह संकल्प करे कि मैं अपने हृदय को राग-द्वेष की गाँठों से गठीला नहीं बनाऊँगा।

साध्वीश्री जी ने कहा कि मिच्छामि दुक्कडं बोलना ही वास्तविक क्षमापना नहीं है। जिनके साथ गत वर्ष में हमारा मन-मुटाव हुआ है, ऊँचे शब्दों में बातचीत हुई हो, उनसे दिल खोलकर, शुद्ध भावों से, सरल हृदय से खमतखामणा करना ही वास्तविक खमतखामणा है। यही आज के दिन की सार्थकता है।

साध्वी चंदनबाला के रोचक इतिवृत्त को व्याख्यायित किया। साध्वी समत्वयशा जी ने उत्तराध्ययन के सूत्रों की विवेचना की। संवत्सरी महापर्व गीत का संगान किया।

साध्वी कर्णिकाश्री जी ने तीर्थंकर परंपरा का विश्लेषण किया। साध्वी सुधाप्रभा जी ने जैन धर्म के प्रभावक आचार्यों की प्रस्तुति दी। सभा अध्यक्ष संजय बोथरा ने बताया कि साध्वीश्री के सान्निध्य में समाज के ७ वर्ष के बच्चों से लेकर ८० वर्ष से ऊपर के श्रावकों ने उपवास, जप, तप, त्याग एवं तपस्या द्वारा आत्मा को भावित किया।

'शासनश्री' साध्वी रतनश्रीजी की स्मृति सभा का आयोजन

अहमदाबाद।

तेरापंथी सभा, अहमदाबाद के तत्त्वावधान में शासनश्री साध्वी रतनश्री जी की स्मृति सभा का आयोजन तेरापंथ भवन, शाहीबाग में किया गया।

शासनश्री साध्वी रतनश्री जी बहुत सरल थी, सहनशीलता से परिपूर्ण थी, रत्नाधिक होते हुए भी आपमें बड़ी विनम्रता थी। आपमें समन्वय का बड़ा गुण था। साध्वीश्री के व्यक्तित्व के अन्य पक्षों को उजागर करते हुए मुनि कुलदीप कुमार जी ने कहा कि सहिष्णुता भी विलक्षण थी, अस्वस्थ होते हुए भी वे पूरा ध्यान रखती और प्रायः समता में रहती थी। सामंजस्य व परस्पर सौहार्द रखने वाली साध्वी थी। अपने पद्यों द्वारा भावों की अभिव्यक्ति दी।

शासनश्री साध्वी रमावती जी ने कहा कि शासनश्री साध्वी रतनश्री जी के साथ वर्षों तक रहने का अवसर प्राप्त हुआ। निकटता से उनकी आचार निष्ठा, व्यवहार निष्ठा, श्रद्धा, भक्ति भाव, विचार निष्ठा हमेशा उच्च व निर्मल रहती थी, वे सहज-सरल व शांत प्रकृति की साध्वी थी।

शासनश्री साध्वी रामकुमारी जी की सहवर्ती साध्वी आत्मप्रभा जी ने अपने भावों के साथ साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी से प्राप्त संदेश का वाचन किया। साध्वी हर्षितप्रभा जी ने अपनी भावना पद्य के माध्यम से व्यक्त की। शासनश्री साध्वी रामकुमारी जी ने पत्र का वाचन किया व दोनों साध्वियों ने गीतिका का संगान किया।

साध्वी मुक्तियशा जी ने आचार्यप्रवर से प्राप्त आध्यात्मिक मंगलकामना संदेश का वाचन करते हुए अन्य चारित्रात्माओं से प्राप्त संदेश की जानकारी दी। साध्वी चैतन्यप्रभा जी ने अपनी भावना कविता के माध्यम से व्यक्त की।

स्मृति सभा में तेरापंथी सभा अध्यक्ष कांतिलाल चोरड़िया, उपाध्यक्ष सुनील बोहरा, सहमंत्री जीतेंद्र छाजेड़, सभा पूर्व अध्यक्ष नरेंद्र सुराणा, अशोक सेठिया, तेमम अध्यक्ष चांददेवी छाजेड़ सहित अन्य सभा-संस्थाओं के पदाधिकारीगण एवं परिचित-जनों ने शासनश्री साध्वी रतनश्री जी को श्रद्धांजलि प्रेषित करते हुए अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

शासनश्री साध्वी सरस्वती जी के संदेश का वाचन अमराईवाड़ी सभा से दिनेश चिंडालिया ने किया। डॉ० धवलभाई दोशी ने साध्वीश्री के चिकित्सा की संपूर्ण जानकारी देते हुए श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

इस अवसर पर विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारियों, अनेक गणमान्य लोगों व श्रावक समाज आदि उपस्थित थे। चार लोगस्स के सामूहिक ध्यान के साथ स्मृति सभा परिसंपन्न हुई। मंच का संचालन सभा मंत्री विकास पितलिया ने किया।

आध्यात्मिक मिलन समारोह

गांधीनगर।

तेरापंथ भवन, गांधीनगर में मुनि अर्हत कुमार जी, तुरकिया भवन में विराजित अजरामर संप्रदाय के आचार्य प्रकाश मुनि की सुशिष्या साध्वी श्रेष्ठश्री जी, साध्वी विलक्षिताश्री जी से आध्यात्मिक मिलन हुआ। संवत्सरिक क्षमायाचना होने के पश्चात मुनि अर्हत कुमार जी एवं साध्वीश्री जी के बीच धर्म वार्ता हुई।

साध्वीश्री जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ से हमारी बहुत आत्मीयता है, इसलिए आज हम आपके दर्शन करने एवं आपसे ऊर्जा लेने आए हैं। मुनिश्री ने कहा कि आज आपसे मिलन हुआ है, आप जैन धर्म की प्रभावना में लगे हुए हैं और ऐसे ही प्रभावना करते रहें। आत्म विकास की साधना बढ़ती रहे। महासभा प्रभारी प्रकाश लोढ़ा ने साध्वीवृंदों को अवगत कराया कि मुनिश्री ने लगभग २३०० घरों का स्पर्श कर श्रावकों में आध्यात्मिक जागृति लाई है। इस अवसर पर तेमम की अध्यक्षा स्वर्णमला पोखरणा आदि श्रावक-श्राविकाएँ उपस्थित थे।

शक्ति आराधना के पर्व नवरात्रि

जाटाबास, जोधपुर।

तेरापंथ भवन में शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी के सान्निध्य में नवाह्निक आध्यात्मिक अनुष्ठान का क्रम विधिवत संपन्न हुआ।

साध्वी कुंथुश्री जी ने कहा कि नवरात्रि के पर्व शक्ति आराधना के पर्व हैं। शक्ति की साधना की जाती है। कोई मंत्र की साधना करता है, कोई तंत्र की साधना करता है। सब चाहते हैं शक्ति का विकास हो। शक्ति का जागरण चेतन्य का जागरण है। अध्यात्म चेतना का जागरण है।

हमारे भीतर अनंत शक्ति है। हम अनंत शक्ति के स्रोत हैं। वह सोई हुई है, उसके जागरण के लिए जप का अनुष्ठान किया।

भीतर की चेतना जगाने के लिए सिद्धि के लिए साधना के प्रयोग आवश्यक है। हमने नौ दिनों तक जप-तप कर मंत्रों का प्रयोग किया। सामूहिक अनुष्ठान में साध्वीवृंद के अतिरिक्त श्रावक समाज भी सम्मिलित हुआ। अनुष्ठान का प्रयोग साध्वी सुमंगलाश्री जी तथा साध्वी शिक्षाप्रभा जी ने करवाए।

मंत्र की शक्ति से करें शक्ति का जागरण

विजयनगर।

मुनि रश्मि कुमार जी ने तेरापंथ भवन में 'द पॉवर ऑफ मंत्रा' के कार्यक्रम में कहा कि मंत्रों में महान शक्ति छिपी होती है, उसका सही और शुद्ध उच्चारण करके उन पर सिद्धि प्राप्त की जा सकती है। जिस अक्षर में कई नायक आदि देवताओं का समावेश हो वह 'बीजाक्षर' कहा जाता है। बहुत से साधक ऐसे होते हैं जो केवल एक बीजाक्षर मंत्र पर जप करते हैं और इसमें भी उन्हें मनोवांछित फल प्राप्ति हो जाती है।

मुनि प्रियांशु कुमार जी ने कहा कि मंत्र आराधना से व्यक्ति जीवन में परिवर्तन गठित कर सकता है, रोग मुक्त हो सकता है। बाधाओं को हटा सकता है। परम पवित्रता से किया गया जप आदमी को शिखर पर ले जा सकता है। देह शुद्धि, मन शुद्धि, दिशा शुद्धि, स्थान शुद्धि और मंत्रों के बारे में विस्तृत जानकारी दी। विशिष्ट उपासक निर्मल नोलखा ने भी अपने विचार रखे। इस अवसर पर सभा, तेयुप, महिला मंडल के पदाधिकारी, सदस्य एवं श्रावक-श्राविका समाज उपस्थित थे।

मासखमण तप अभिनंदन के कार्यक्रम

सरदारपुरा, जोधपुर

साध्वी जिनबाला जी के सान्निध्य में दीपक कोचर के मासखमण तप (३० दिन तक उपवास) के तप का अभिनंदन कार्यक्रम आयोजित किया गया।

सरदारपुरा स्थित मेघराज तातेड़ भवन में आयोजित कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुआ। सुनील बैद ने गीत द्वारा मंगलाचरण किया। युवती मंडल की बहनों और कन्या मंडल की बहनों ने संयुक्त रूप से प्रस्तुति द्वारा अनुमोदना की।

तेयुप ने गीतिका का संगान किया। महिला मंडल और कन्या मंडल ने भी अपनी स्वर लहरियाँ प्रस्तुत की। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष सुरेश जीरावला, जिनेश्वर तातेड़, जीत बाफना, विनय तातेड़ ने अपनी भावना व्यक्त की। साध्वी जिनबाला जी ने कहा कि दीपक ने २३ वर्ष की अल्प अवस्था में मासखमण का तप संपन्न किया है। दीपक तेरापंथ धर्मसंघ के गौरव मुख्य मुनि महावीर कुमार जी के संसारपक्षीय परिवार से हैं। दीपक ने भी अल्पायु में मासखमण कर कुल का दीपक चढ़ाया है। साध्वीश्री जी ने दीपक को आगे बढ़ने की प्रेरणा दी।

साध्वी करुणाप्रभा जी ने कहा कि तप के द्वारा कर्मों के शुभ बंधन को तोड़ा जा सकता है। दीपक ने तप दीप जलाकर भीतर के कर्मरूपी अंधकार को दूर किया है। साध्वी भव्यप्रभा जी ने अपने उद्गार व्यक्त किए। साध्वी महकप्रभा जी ने सुमधुर गीतिका का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन शालू तातेड़ ने किया।

कांदिवली

हेमलता धाकड़ सुपुत्री भावना-अमृत धाकड़ ने २८ वर्ष की उम्र में मासखमण तप कर सबको चमत्कृत किया है। साध्वी निर्वाणश्री जी ने तेरापंथ भवन, कांदिवली में मासखमण तप का प्रत्याख्यान करवाते हुए उद्गार व्यक्त किए।

साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभा जी ने कहा कि प्रलंबित तप के लिए सर्वाधिक अपेक्षित है आत्मबल एवं दृढ़-संकल्प। यह ऐसे घटक हैं, जिनके सहारे शरीर से दुर्बल व्यक्ति भी नई ऊँचाई को छू सकता है।

इस अवसर पर श्री तुलसी महाप्रज्ञ फाउंडेशन तथा तेरापंथी सभा, कांदिवली एवं मलाड़ की ओर से तपस्विनी का वर्धापन करते हुए साहित्य एवं दुपट्टा उपहार स्वरूप भेंट किया गया। अभिनंदन पत्र का वाचन मलाड़ सभा के मंत्री हस्तीमल भंडारी ने किया। फाउंडेशन के मंत्री मनीष कोठारी ने शुभकामनाएँ दी।

साध्वीवृंद द्वारा गीत की प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम का शुभारंभ कांदिवली महिला मंडल की बहनों के गीत से हुआ। मुंबई महिला मंडल की अध्यक्ष रचना हिरण ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। शिशोदा के धाकड़ परिवार की ओर से जमुना धाकड़ ने परिवार के गौरव को बढ़ाने के लिए साधुवाद दिया। स्थानीय सभा के अध्यक्ष पारस दुगड़, प्रकाश धाकड़, नीतू नाहटा, नूतन लोढ़ा आदि ने वर्धापना की।

वरिष्ठ श्रावक कस्तूरचंद डूंगरवाल एवं जमुना धाकड़ तप का संकल्प स्वीकार कर अनुमोदना की। धन्यवाद ज्ञापन अशोक हिरण ने किया। मंच संचालन साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभा जी ने किया।

टी-दासरहल्ली

तेरापंथ सभा भवन में शासनश्री साध्वी कंचनप्रभाजी ने मासखमण तप अभिनंदन समारोह में कहा कि जीवन के वे पल महापुण्यवान होते हैं, आलौकिक होते हैं जब चैतन्य सुदीर्घ तपस्या के लिए संकल्पित होते हैं। शरीर के प्रति ममत्व विसर्जन इंद्रियों तथा मन पर विजय से ही तपस्या सम्भव है। तपस्या वह गुलदस्ता है, जिसको पकड़ने वाला सुवासित होता है तथा परिपार्श्व का वातावरण भी सुवासित होता है। तपस्या जीवन का वरदान है।

शासनश्री साध्वी मंजुरेखाजी ने कहा कि तपस्या श्रावक जीवन का सर्वोत्तम ध्येय है। तपस्या के द्वारा पूर्वजन्मों के संचित निबिड़ कर्म क्षीण होते हैं। आत्मा निर्मल होती है। तपस्वी केवल आहार का त्याग ही नहीं करता बल्कि सामायिक स्वाध्याय जप के द्वारा शांत-संतुलित जीवनशैली को प्राप्त करता है। साध्वीवृंद ने तप अनुमोदना में गीतिका का संगान किया। सुवालाल दक को साध्वीश्रीजी ने मासखमान तप का प्रत्याख्यान कराया। मनोहरलाल चावत को 68 आयंबिल का तथा बिंदुराय सोनी को श्रेणी तप में 6 दिन तप का प्रत्याख्याण कराया। बिंदु द्वारा संपादित एवं रवि सामरा द्वारा सह-संपादित 'गम्भीर्य गुम्फित' गौतम कुमार सेठिया की जीवनी पर आधरित पुस्तक सम्प्रेषित की।

कार्यक्रम की शुरुआत शासनश्रीजी के मुखारविंद से मंगलमंत्रोच्चर से हुई। महिला मंडल ने मंगलाचरण किया। संस्थापक अध्यक्ष लादुलाल बाबेल ने स्वागत एवं तप अभिनंदन किया, तेयुप साथियों ने गीतिका का संगान किया, कोलकाता सभा के पूर्व अध्यक्ष एवं महासभा के पश्चिम बंगाल के आंचलिक प्रभारी तेजकरण बोथरा ने तप अभिनंदन कर, कोलकाता तेरापंथ परिवार की निर्देशिका सम्प्रेषित की। सभा कोषाध्यक्ष प्रकाश गाँधी ने गुरुदेव द्वारा प्राप्त संदेश का वाचन किया, सभा उपाध्यक्ष विनोद मेहर ने दक परिवार से दीक्षित मुनि कोमल कुमारजी का संदेश वाचन किया, सभा उपाध्यक्ष लोकेश बोहरा ने सभा द्वारा प्रेषित अभिनंदन पत्र का वाचन किया, सभा अध्यक्ष नवरतनजी गाँधी, महिला मंडल अध्यक्षा रेखा मेहर, अभातेयुप से दिनेश पोखरना एवं रकेश दक, भगवतीलाल मांडोत, रवि सामरा ने भी तप अभिनंदन में अपनी भावाभिव्यक्ति संप्रेषित की। संचालन सभा मंत्री प्रवीण बोहरा ने किया।

नमस्कार महामंत्र का सामूहिक सवा लाख जप अनुष्ठान का आयोजन

कटक, ओड़िशा।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में ५१ दिवसीय घर-घर १३ घंटे नमस्कार महामंत्र जप कार्यक्रम की संपन्नता पर तेरापंथी सभा द्वारा नमस्कार महामंत्र का सामूहिक सवा लाख जप अनुष्ठान आयोजित किया गया। जिसमें ३२२ भाई-बहनों ने हिस्सा लिया।

इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि जिस प्रकार ज्ञान में केवल ज्ञान बड़ा है, गणधरों में गौतम गणधर मुख्य हैं, दानों में अभयदान बड़ा है, उसी प्रकार ज्ञानों में केवल ज्ञान। उसी प्रकार मंत्रों में नमस्कार महामंत्र श्रेष्ठ है। नमस्कार महामंत्र विघ्नहर्ता है। नमस्कार महामंत्र चौदह पूर्वों का सार है। जप से नकारात्मक ऊर्जा नष्ट होती है और आभामंडल पवित्र होता है। घर के वातावरण को शुद्ध करने के उद्देश्य से घरों में १३ घंटे का जप कार्यक्रम आयोजित किया गया। जो ५१ दिन आयोजित हुआ। जप के साथ ५१ दिनों में कुल ३६५५ सामायिक हुई। नमस्कार महामंत्र का सवा लाख जप अनुष्ठान दो घंटे में हुआ। जिसमें तेरापंथ जैन समाज से लगभग ३२२ श्रद्धालु बैठे।

आभार ज्ञापन तेरापंथी सभा के मंत्री चैनरूप चोरड़िया ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में तेरापंथी सभा, तेमम, तेयुप, तेरापंथ कन्या मंडल, तेरापंथ किशोर मंडल, ज्ञानशाला परिवार आदि के पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

पर्युषण महापर्व का कार्यक्रम

असाड़ा।

साध्वी रतिप्रभा जी के सान्निध्य में पर्युषण महापर्व का अष्टांगिन कार्यक्रम आयोजित हुआ।

साध्वी रतिप्रभा जी ने प्रथम दिवस 'खाद्य संयम दिवस' पर कहा कि जितना शरीर के लिए खाना आवश्यक है, उतना ही नहीं खाना भी स्वास्थ्य एवं आत्मा के लिए आवश्यक है। मिताहार एवं हितकर आहार का प्रयोग करना चाहिए। साध्वी मनोज्ञयशा जी ने इंगाल दोष, अंगार दोष, धूम दोष, संयोजना दोष, प्रमाणातिक दोष इसके बारे में विस्तार से चर्चा की। साध्वी पावनयशा जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। साध्वी रतिप्रभा जी ने राजा कोणक के जीवन पर प्रकाश डालते हुए पर्युषण पर्व की महत्ता बताई।

दूसरा दिन 'स्वाध्याय दिवस' के रूप में आयोजित हुआ। साध्वी रतिप्रभा जी ने कहा कि स्वाध्याय ऐसा रसायन है जिसे प्राप्त कर आदमी अपनी ओजस्वी बनाता है और नई-नई जानकारी से ज्ञानवृद्धि करता है। स्वाध्याय तेज लाइट है जिसमें अपना किया हुआ भला-बुरा सब दिखाई देता है। साध्वी कलाप्रभा जी ने भगवान महावीर के पूर्व भव नयसार का वर्णन करते हुए सम्यक्त्व धर्म की नींव बताया। साध्वी मनोज्ञयशा जी ने कहा कि स्वाध्याय अपने घर में झाड़ू लगाने जैसा है। रात्रि में साध्वी पावनयशा जी ने प्रतिक्रमण क्यों, कैसे, विधि, आदि पर विस्तृत जानकारी दी।

'सामयिक दिवस' पर साध्वी मनोज्ञयशा जी ने त्रिपदी वंदना का प्रयोग तथा साध्वी रतिप्रभा जी ने अभिनव सामायिक का प्रयोग करवाया। साध्वीश्री जी ने आगे कहा कि सामायिक संवर तथा शोधन दोनों की संयुक्त प्रक्रिया है। अंतगढ़ सूत्र में नाग गाथापति के जीवन-वृत्त पर प्रकाश डाला।

साध्वी कलाप्रभा जी ने मरीचि कुमार के जीवन पर प्रकाश डाला। रात्रि में साध्वी रतिप्रभा जी एवं साध्वी मनोज्ञयशा जी ने ऐतिहासिक घटनाओं का क्रम चलाया।

'वाणी संयम दिवस' पर साध्वी रतिप्रभा जी ने कहा कि वाणी से हमारा व्यवहार चलता है। मधुर वाणी हमारा ऐसा शृंगार है, जिससे हमारी कांति कभी फीकी नहीं पड़ती। साध्वी कलाप्रभा जी ने वाणी संयम पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वाणी का विवेक ही वाणी का संयम है। साध्वी मनोज्ञयशा जी एवं साध्वी पावनयशा जी ने गीत का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी मनोज्ञयशा जी ने किया।

'अणुव्रत दिवस' पर साध्वी रतिप्रभा जी ने श्रावक के १२ व्रतों के लिए प्रेरणा देते हुए कहा कि श्रावक का महत्त्वपूर्ण स्थान है। साधु बड़ी रत्नों की माला तो श्रावक छोटी रत्नों की माला है। श्रावकत्व का जागरूक से पालन हो तो हिंसा से बचा जा सकता है। साध्वी कलाप्रभा जी ने अणुव्रत पर कविता का संगान किया।

'जप दिवस' पर साध्वी रतिप्रभा जी ने कहा कि मंत्र का जाप व्यक्ति को संसार से विमुख न करके संसार के प्रति, संसार के कर्तव्यों के प्रति जागरूक करता है। बिखरी चित्त शक्तियों को एकाग्र करता है। साध्वी कलाप्रभा जी ने मंत्रों का राजा महामंत्र नमस्कार मंत्र की महत्ता पर प्रकाश डाला।

रात्रि में कन्या मंडल एवं महिला मंडल के पर्युषण पर्व का महत्त्व कैसे इस पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। संचालन साध्वी मनोज्ञयशा जी ने किया।

'ध्यान दिवस' पर साध्वी रतिप्रभा जी ने कहा कि ध्यान हमारे कर्म का सबसे महत्त्वपूर्ण साधन है। जो कार्य करें उसमें तल्लीन बनें तो हमारा ध्यान बन जाता है। साध्वी कलाप्रभा जी ने भगवान महावीर के पूर्व भवों का वर्णन किया। रात्रि में भगवान मल्लिनाथ के जीवन पर प्रकाश डाला।

संवत्सरी महापर्व के कार्यक्रम का शुभारंभ गीत के साथ हुआ। साध्वी मनोज्ञयशा जी ने सर्वप्रथम बताया यह पर्व आत्मावलोकन का पर्व है। अपने आपको जानने का पर्व है। अपनी भूलों के लिए प्रायश्चित का पर्व है।

साध्वी कलाप्रभा जी ने भगवान महावीर के बाल्यकाल, यौवन एवं अभिनिष्क्रमण तक वर्णन सुनाया। साध्वी रतिप्रभा जी ने कालचक्र के बारे में विस्तार से जानकारी दी तथा पर्युषण पर्व का महत्त्व कैसे इस पर भी प्रकाश डाला। साध्वी मनोज्ञयशा जी ने भगवान महावीर और गौशालक के साथ हुए चातुर्मास का वर्णन किया।

साध्वी रतिप्रभा जी ने चंदनबाला के विषय में बताया। इसके पश्चात गणधरवाद, जम्बू स्वामी, प्रभावक आचार्य और अंत में पट्टावली का वाचन किया।

'क्षमा दिवस' पर साध्वी रतिप्रभा जी ने कहा कि जहाँ क्षमा है वहीं अहिंसा, समता और सहिष्णुता हो सकती है। क्षमा करना बहुत बड़ी वीरता है। क्षमा करना औरों की भलाई नहीं अपनी भलाई है। सर्वप्रथम अपने आराध्य आचार्यश्री महाश्रमण जी से फिर साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी, मुख्य मुनि महावीर कुमार जी, साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी से क्षमायाचना की तथा साध्वियों से क्षमायाचना करने के बाद श्रावक-श्राविकाओं से क्षमायाचना की।

साध्वीवृंद ने क्षमायाचना की एवं इस अवसर पर विशिष्ट श्रावक मांगीलाल भंसाली ने भी अपने विचार रखे तथा क्षमा पर गीत की प्रस्तुति दी।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
24 - 30 अक्टूबर, 2022

✦ *किसी को धोखा देना पाप है तो किसी से धोखा खाना मूर्खता है। न किसी से धोखा खाओ और न किसी को धोखा दो।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

स्वयं को जानने का पर्व है पर्युषण महापर्व

सिकंदराबाद।

तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में साध्वी त्रिशला कुमारी जी के सान्निध्य में पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व का शुभारंभ हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ सरदारशहर, मोमासर, आडसर, गंगानगर, पीलीबंगा आदि क्षेत्रों के भाई-बहनों ने नमस्कार महामंत्र के अखंड जाप से हुआ।

साध्वी संपतिप्रभा जी ने क्षमा धर्म की महत्त्वता को उजागर किया। खाद्य संयम पर साध्वी रश्मिप्रभा जी ने विचारों की प्रस्तुति दी। साध्वी कल्पयशा जी ने महासती दीपा जी के जीवन को उजागर किया।

साध्वी त्रिशला कुमारी जी ने कहा कि हमारी भारतीय संस्कृति पर्व और त्योहारों की संस्कृति है। हर धर्म में अपने-अपने पर्वों का महत्त्व है।

पर्युषण महापर्व जप, तप, ज्ञान, स्वाध्याय आदि करने का उत्तम अवसर है। लक्ष्मीपत बैद ने सभा की तरफ से आवश्यक सूचनाएँ दी। कार्यक्रम का संचालन साध्वी कल्पयशा जी ने किया।

स्वाध्याय दिवस का शुभारंभ मेवाड़ और मारवाड़ के श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाओं द्वारा मंगलाचरण से हुआ।

साध्वी त्रिशला कुमारी जी ने कहा कि हम सब यात्री हैं, यात्रा कर रहे हैं, लेकिन हमारी जो जन्म-मरण की यात्रा चल रही है अनंत काल से हम इस यात्रा में यात्रातीत हैं, इससे पार पहुँचने का साधना क्या है। इस संसार-रूपी समुद्र से पार पहुँचने की नौका है सम्यक् दर्शन। सम्यक्त्व एक ऐसा प्लेन है जो अर्थ पुद्गल परावर्तन के भीतर-भीतर हमें मोक्ष तक पहुँचा देगा।

साध्वी संपत्तिप्रभा जी ने दस धर्मों के अंतर्गत मुक्ति धर्म का मार्मिक विवेचन किया। साध्वी रश्मिप्रभा जी ने स्वाध्याय हमारे लिए क्यों जरूरी है, इस विषय पर विचारों की प्रस्तुति दी। साध्वी कल्पयशा जी ने कहा कि इतिहास में शक्ति की पूजा होती है, शक्ति के अनेक स्त्रोत हैं। उसमें सबसे बड़ा स्त्रोत है—श्रद्धा की शक्ति, अध्यात्म की शक्ति।

कार्यक्रम का संचालन कल्पयशा जी ने किया। साध्वीश्री जी के सान्निध्य में रात्रिकालीन प्रतिक्रमण के पश्चात सामूहिक पैंसठिया छंद की साधना का कार्यक्रम रहा।

सामायिक दिवस के उपलक्ष्य में अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप के तत्त्वावधान में 'अभिनव सामायिक' का आयोजन किया गया। साध्वी संपत्तिप्रभा जी ने त्रिपदी वंदना, ध्यान, योग आदि के प्रयोग करवाए। कार्यक्रम का शुभारंभ बीकानेर, गंगाशहर, चोखला के भाई-बहनों के मंगल संगान से हुआ। तेयुप के अध्यक्ष वीरेंद्र घोषल ने सभी का स्वागत किया।

साध्वी रश्मिप्रभा जी ने सामायिक की महत्ता को उजागर किया। साध्वी कल्पयशा जी ने पाँच तिथियों का महत्त्व बताया। साध्वी त्रिशला कुमारी जी ने उद्गार व्यक्त किए।

वाणी संयम दिवस का शुभारंभ बीदासर, राजगढ़, तारानगर आदि क्षेत्रों की बहनों और भाईयों के मंगलाचरण से हुआ। साध्वी संप्रत्तिप्रभा जी ने दस धर्मों के अंतर्गत 'आर्जव' धर्म का विवेचन किया। साध्वी रश्मिप्रभा जी ने वाणी संयम दिवस पर क्यों, कैसे? कब बोलना चाहिए इस विषय पर अपनी अभिव्यक्ति दी। साध्वी कल्पयशा जी ने गौरवशाली इतिहास के सुनहरे पृष्ठों को उजागर किया।

साध्वी त्रिशला कुमारी जी ने भगवान महावीर के जीवन-वृत्त को उजागर किया। साध्वीश्री जी ने ३, ४, ५ पंचोला करने वाले भाई-बहनों को प्रत्याख्यान करवाया।

अणुव्रत चेतना दिवस का शुभारंभ राजलदेसर, रतनगढ़, श्रीडूंगरगढ़, नोहर, भादरा, सिरसा व लूनियावास के भाई-बहनों के मंगलाचरण से हुआ। साध्वी संपत्तिप्रभा जी, साध्वी रश्मिप्रभा जी ने विचार व्यक्त किए। साध्वी कल्पयशा जी ने इतिहास की रोचक घटनाओं का उल्लेख किया।

साध्वी त्रिशला कुमारी जी ने अणुव्रत चेतना दिवस पर कहा कि आचार्यश्री तुलसी की वर्तमान युग की युगीन समस्याओं से निजात पाने की समायोचित देन अणुव्रत है।

तेरांपथी सभा की तरफ से लक्ष्मीपत बैद ने सूचनाएँ प्रेषित की। राजा राजेश्वरी गार्डन के मालिक रमेश की पत्नी और उनके सुपुत्र का तेरापंथी सभा अध्यक्ष बाबूलाल बैद ने व्यवस्था हेतु सम्मान किया।

जप दिवस का शुभारंभ सुजानगढ़, छापर, चाड़वास, चुरू, टमकोर, पड़िहारा के भाई-बहनों के मंगलाचरण से हुआ। साध्वी संपत्तिप्रभा जी ने समसामायिक विषय पर प्रस्तुति दी। साध्वी रश्मिप्रभा जी ने कहा कि मंत्र एक औषधि है जो न केवल हमारे तन को स्वस्थ करती है, बल्कि हमारे मन और भावों को भी स्वस्थ बनाती है।

साध्वी त्रिशला कुमारी जी ने कहा कि एक धार्मिक व्यक्ति की पहचान क्या है? क्या सामायिक करने वाला धार्मिक होता है? जप करने वाला धार्मिक होता है? साध्वीश्री जी ने कहा कि जितनी भी बाह्य क्रिया है वे उपासना की विधि है। एक धार्मिक व्यक्ति की मूल पहचान होती है कि उसके भीतर कितनी करुणा है, दया-रहम की भावना कितनी है।

श्री जैन सेवा संघ के अध्यक्ष गौतम गुगुलिया ने सेवाओं का उल्लेख किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी कल्पयशा जी ने किया।

ध्यान दिवस का शुभारंभ लाडनूं, कालू, लूणकरणसर, हनुमानगढ़, किशनगढ़ आदि क्षेत्रों के भाई-बहनों के मंगलाचरण से हुआ।

साध्वी संप्रत्तिप्रभा जी, साध्वी रश्मिप्रभा जी ने विचार व्यक्त किए। साध्वीश्री जी ने कहा कि यदि आप तनाव, टेंशन, डिप्रेशन से मुक्ति चाहते हैं, यदि आप अपनी कार्य क्षमता को बढ़ाना चाहते हैं, यदि आप सुख-शांति का जीवन चाहते हैं तो एक सरल वैज्ञानिक हल है—ध्यान।

साध्वी कल्पयशा जी ने लाडनूं के गौरवशाली इतिहास के पृष्ठों को उजागर किया। सिकंदराबाद के अध्यक्ष बाबूलाल बैद ने अपने विचार व्यक्त किए। साध्वी रश्मिप्रभा जी ने गीतिका प्रस्तुत की।

संवत्सरी महापर्व का शुभारंभ तेरापंथी सभा के पदाधिकारियों के मंगलाचरण से हुआ। इस अवसर पर साध्वी कल्पयशा जी ने भव परंपरा से गुजरे भगवान महावीर के जीवन प्रसंगों, बाल-लीलाओं, साधनाकाल और उपसर्गों की कहानी को रोचक ढंग से सुनाया।

साध्वी त्रिशला कुमारी जी ने संवत्सरी महापर्व के महत्त्व एवं इसे मनाने की परंपरा आदि तथ्यों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा संवत्सरी मैत्री का पर्व है। एक-दूसरे की भूलों को भूलकर यह गले मिलने का पर्व है।

इस अवसर पर साध्वी रश्मिकुमार जी ने शालीभद्र के जीवन चरित्र का उल्लेख किया। साध्वी संप्रत्तिप्रभा जी ने ध्यान करने से होने वाले लाभों पर प्रकाश डाला। संचालन साध्वी कल्पयशा जी ने किया।

क्षमायाचना महापर्व का शुभारंभ महिला मंडल के संगान से हुआ। संस्थाओं की तरफ से तेयुप के अध्यक्ष वीरेंद्र घोषल, टीपीएफ राष्ट्रीय सहमंत्री ऋषभ दुगड़, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष प्रकाश भंडारी, महिला मंडल अध्यक्ष अनीता गिड़िया, महासभा परिवार से ललित बैद, ज्ञानशाला परिवार से संगीता गोलछा, कार्यकर्ता प्रकाश दफ्तरी ने क्षमा का महत्त्व बताते हुए सभी श्रावक समाज ने अपनी-अपनी संस्थाओं की तरफ से क्षमायाचना की।

आर्थिक सहयोग के लिए सभी दानदाताओं के प्रति आभार व्यक्त किया। जैन तेरापंथ वेलफेयर सोसाइटी के अध्यक्ष महेंद्र भंडारी ने इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किए। निवर्तमान अध्यक्ष सुरेश सुराणा ने अपने भाव व्यक्त किए तथा क्षमायाचना की। साध्वी रश्मिप्रभा जी ने गीतिका प्रस्तुत की। साध्वी कल्पयशा जी ने उद्गार व्यक्त किए।

साध्वी त्रिशला कुमारी जी ने कहा कि मकान और मन की समय-समय पर सफाई करते रहना चाहिए। जैनधर्म में क्षमायाचना का पर्व मन की सफाई का पर्व है। क्षमा करने वाला बड़ा होता है, क्षमा वीरों का आभूषण है। कार्यक्रम का संचालन बिमल पुगलिया ने किया। इस अवसर पर श्रावक-श्राविकाओं ने आचार्यश्री महाश्रमण जी एवं सभी साधु-साध्वियों से क्षमायाचना की। लक्ष्मीपत बैद ने सभी श्रावक-श्राविकाओं से एक-दूसरे से आपस में सामूहिक रूप से क्षमायाचना करवाई।

जैनों का प्रमुख पर्व है पर्युषण महापर्व

फरीदाबाद।

डॉ० साध्वी शुभप्रभा जी के सान्निध्य में नवाह्निक पर्युषण पर्वाराधना का कार्यक्रम आयोजित किया गया। पर्व शुभारंभ के दिन साध्वी शुभप्रभा जी ने कहा कि भारतीय परंपराओं में अनेक त्योहार, पर्व मनाए जाते हैं। जैनों का प्रमुख पर्व पर्युषण महापर्व है।

यह महापर्व क्यों? नवकार मंत्र से पूर्व महा शब्द जुड़ा, भगवान महावीर के साथ भी वीर से पहले महा शब्द जुड़ा है। वैसे ही इस पर्व में महा शब्द जुड़ा है। यह पर्व आत्मशुद्धि का, चैतन्य जागरण का, चिकित्सा का, कार्यसिद्धि का, स्मृति-विस्मृति का, पौरुष जागरण का और जैन एकता का प्रमुख पर्व है।

पर्युषण पर्व के शुभारंभ पर हम अपने भीतर तलाशें—दिन-भर में कितनी बार प्रतिक्रिया होती है, अपने आपका लेखा-जोखा तैयार करना है। पर्युषण के लिए कितनी तैयारी की है? इस पर्व पर अपना आत्मावलोकन करें कि आपकी दृष्टि अच्छाई पर ज्यादा केंद्रित है या बुराई पर। अपने भीतर ऐसा दीप जलाएँ जो अंधेरे में भी रोशनी दे सके।

साध्वी कांतयशा जी ने गीत का संगान, साध्वी मंदारयशा जी ने भगवान ऋषभ की जीवनी, साध्वी अनन्यप्रभा जी ने खाद्य संयम पर विचार व्यक्त किए। प्राक् वक्तव्य के रूप में साध्वी कांतयशा जी ने ठाणां सूत्रानुसार १० धर्मों पर विशद विवेचन किया। उन्होंने कहा कि हम सब चैतन्य की यात्रा में यात्रायित हैं। हम चाहते हैं ऐसा मनोभाव, ऐसी शक्ति जो आनंदमय हो। सामायिक अनुष्ठान इसी दिशा में बढ़ने का उपक्रम है। अभिनव सामायिक अनुष्ठान साध्वी कांतयशा जी ने करवाया। भगवान महावीर की जीवन-यात्रा में नयसार के भव में सम्यक्त्व का दीप जला।

संवत्सरी महापर्व पर अपने विचार व्यक्त करते हुए साध्वीश्री जी ने बताया कि संवत्सरी पर्व महाकुंभ है। पर्युषण महापर्व महास्नान का पर्व है, अलौकिक पर्व है, अहिंसा की आराधना का पर्व है, कषायों का उपशम करके आत्म जागृति लाने वाला पर्व है।

साध्वी कांतयशा जी ने प्रतिदिन के विषय से संबद्ध गीत का संगान किया। साध्वी मंदारयशा जी ने तीर्थंकर ऋषभ, अजित, सुमतिनाथ पर प्रकाश डाला। साध्वी अनन्यप्रभा जी ने मूल विषय पर प्रस्तुति दी।

रात्रि में प्रतिदिन विषयों से संबद्ध कार्यक्रमों में अच्छी उपस्थिति रही। रात्रिकालीन कार्यक्रम में बहादुर सिंह दुगड़, सभा मंत्री संजीव बैद, मंजु कोठारी आदि ने गीत का संगान किया।

क्षमापर्व के उपलक्ष्य में साध्वी शुभप्रभा जी ने कहा कि क्षमा कल्पवृक्ष है, जिसकी सघन छाँव में हर व्यक्ति मीठे फल प्राप्त करता है। क्षमा सुरक्षा कवच है। अतीत की भूलों से प्रेरणा प्राप्त कर भविष्य के सुनहरे सपनों को सजा जीवन की नई शुरुआत करें।

साध्वी कांतयशा जी ने मैत्री गीत का संगान किया। सभाध्यक्ष गुलाब बैद, पूर्व अध्यक्ष रोशनलाल बोरड़, महिला मंडल अध्यक्ष सुमंगला बोरड़, टीपीएफ अध्यक्ष विजय नाहटा, तेयुप अध्यक्ष विवेक बैद, अणुव्रत समिति अध्यक्ष इंद्रचंद जैन, बहादुर सिंह दुगड़, चैनरूप तातेड़ ने क्षमायाचना की। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री संजीव बैद ने किया।

प्रथम नेशनल नेक्सजेन कॉन्फ्रेंस

भायंदर, मुंबई।

टीपीएफ दो दिवसीय प्रथम राष्ट्रीय नेक्सजेन कॉन्फ्रेंस का आयोजन भायंदर में संपन्न हुआ। इस कॉन्फ्रेंस में दिल्ली, कोलकाता, बैंगलोर, जोधपुर से आए प्रतिभागियों सहित टीपीएफ के कई वरिष्ठ एवं युवा कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

कार्यक्रम के प्रारंभ में राष्ट्रीय अध्यक्ष नवीन पारख, मुख्य न्यासी एम०सी० बलदोटा, महामंत्री हिम्मत मांडोत एवं देश के विभिन्न क्षेत्रों से आए पदाधिकारीगण, टीपीएफ सदस्यों का स्वागत राष्ट्रीय आर्बिट्रेटर बलवंत चोरड़िया, मुंबई शाखा अध्यक्ष तेजप्रकाश डांगी तथा वरिष्ठ सदस्यों ने किया।

पहले सत्र का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से किया गया। सभी का स्वागत करते हुए शाखा अध्यक्ष तेजप्रकाश डांगी ने कहा कि यह एक ऐतिहासिक अवसर है। इस अधिवेशन के संयोजक अभिषेक दयाल ने अधिवेशन के विभिन्न सत्रों की जानकारी दी। राष्ट्रीय अध्यक्ष नवीन पारख ने मुंबई शाखा की प्रशंसा करते हुए कहा कि चाहे मेंबरशिप हो, अर्थ विसर्जन हो या विभिन्न कार्यक्रम हो या राष्ट्रीय अधिवेशन में उपस्थिति हो, मुंबई हमेशा अग्रगण्य रही है। खासकर फैलो सदस्य में जो योगदान रहा है, उसकी प्रशंसा की। साथ ही कार्यकाल में किए गए कार्यों हेतु मुंबई पदाधिकारियों को मेडल ऑफ एक्सीलेंस से सम्मानित किया गया।

एम०सी० बलदोटा, बलवंत चोरड़िया, हिम्मत मांडोत, विमल शाह सहित सभी वक्ताओं ने नेक्सजेन की पूरी टीम की सराहना की।

बलवंत चोरड़िया ने अधिवेशन की सराहना करते हुए कहा कि मुंबई एक बड़ी शाखा है, जिसमें सभी तरह के एक्सपर्ट का समावेश है। गणमान्य द्वारा सभी प्रायोजकों का सम्मान किया गया। सत्र का संचालन मुंबई के मंत्री दिलखुश मेहता व स्वेच्छा मेहता ने किया।

दूसरे सत्र में वन टू वन नेटवर्किंग का सेशन रखा गया। इसकी शुरुआत कुछ डांस और हँसी के साथ की गई। कॉन्फ्रेंस में उपस्थित सहभागियों ने यूनिक एडजेस्टिव ऐड कर अपना परिचय दिया। इस सत्र का संचालन नीरज मोटावत व कमल धाड़ेवा ने किया।

तीसरा सत्र एंटप्रोन्योर अमित शारदा (एमडी, सोलफ्लोवर) द्वारा किया गया, जिसमें उन्होंने अपनी जीवन की कहानी से सभी को प्रेरित किया।

चतुर्थ सत्र कॉर्पोरेट क्विज का रहा, जिसका संचालन राष्ट्रीय महामंत्री हिम्मत मांडोत ने किया। उनके विजेता स्नेहा मेहता व याशिका खटेड़ रहे। मुंबई टीम ने यह अपील की ऐसा ही कार्यक्रम आगामी राष्ट्रीय अधिवेशन में भी रखा जाए।

अंतिम सत्र अभिनव सामायिक का रहा। शनिवार का दिन होने से ७ से ८ बजे तक अभिनव सामायिक की गई और सत्र का संचालन बलवंत चोरड़िया ने किया।

दूसरे दिन का शुभारंभ योग द्वारा किया गया। इस सत्र में सुरभि गांधी ने योग व हेल्दी लाइफ जीने के तरीके बताए। कॉन्फ्रेंस को मजेदार बनाने के लिए ट्रेजर हंट रखा गया, जिसमें आठ टीमों ने पूरी केशव सृष्टि की प्रॉपर्टी पर खेला।

अगले सत्र में मनन मेहता-फाउंडर ऑफ मॉडर्नाइजिंग प्रोसेस का था। इन्होंने बहुत ही सरल तरीके से ३० मिनट में बिना कोड के एप कैसे बना सकते हैं, इसके तरीके बताए।

इस कॉन्फ्रेंस के अंतिम सत्र में पब्लिक स्पीकिंग पर वर्कशॉप रखी गई, जिसके वक्ता चिराग पामेचा थे। जिन्होंने कैसे हम कॉन्फिडेंस और विचारों की एकाग्रता के साथ पब्लिक स्पीकिंग कर सकते हैं। कार्यक्रम में प्रणय धाड़ेवा जो सिर्फ ८ साल का बच्चा है, फिर भी गरीब बच्चों को पढ़ाता है उनकी भी सहायता की गई।

दूसरे दिन अधिवेशन की समाप्ति पर आभार ज्ञापन प्राची पटावरी ने किया। सभी अतिथियों, वरिष्ठ सदस्यों, सहभागियों और सदस्यों—कमल धाड़ेवा, नीरज मोटावत, हर्षल जैन, दर्शक बोहरा, विवेक डांगी ने अधिवेशन को सफल बनाने के लिए धन्यवाद दिया।

कॉन्फ्रेंस में जोधपुर शाखा सदस्य, पवन बोथरा, नॉर्थ जोन मंत्री स्वीटी जैन, नेशनल फेमिला संयोजक याशिका खाटेड़ उपस्थित थे।

कार्यक्रम को सफल बनाने में कैलाश बाफना, के०एल० परमार, मनीष कोठारी, हिम्मत हिरण, बी०एल० बोरदिया, कपिल सिसोदिया, रमेश सिंघवी, जे०पी० गादिया, मनीष कटारिया आदि अनेक सदस्यों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही।

मॉर्निंग वॉक - एक लाख स्टेप टुगेदर

कोलकाता।

टीपीएफ, कोलकाता अपने ध्वज पोत कार्यक्रम के अंतर्गत फोरम के मुख्य उद्देश्य में से एक स्वास्थ्य संबंधित कार्यक्रम 'एक लाख स्टेप टुगेदर' रखा। इसका मुख्य उद्देश्य है—स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता। कार्यक्रम फोरम की कोलकाता शाखा विक्टोरिया मेमोरियल पार्क में आयोजित किया गया। यह शाखा द्वारा पाँववाँ कार्यक्रम है।

अध्यक्ष प्रीति जैन की सोच, उपाध्यक्ष अशोक पारख व बबीता बैद, सचिव राजेंद्र सेठिया, सह-सचिव प्रतीक दुगड़ एवं प्रतीक श्रीमाल, कोषाध्यक्ष श्रवण बोथरा, संगठन मंत्री निधि कोचर व कार्यसमिति सदस्यों की सक्रियता से कार्यक्रम सफल रहा।

निवर्तमान अध्यक्ष कमल कुमार सहित लगभग १८ लोगों ने अपना योगदान देकर एक लाख कदम के लक्ष्य को पार किया। सहमंत्री प्रतीक दुगड़ ने कार्यक्रम के संयोजक की भूमिका निभाई।

टॉस्क फोर्स जन-जन का सशक्तिकरण कार्यशाला का आयोजन

सूरत।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा आयोजित तेरापंथ टास्क फोर्स जन-जन का सशक्तिकरण कार्यशाला का आयोजन अरिहंत एकेडमी स्कूल टीकम नगर में किया गया। मंगलाचरण के साथ कार्यशाला का प्रारंभ किया गया। अरिहंत एकेडमी से प्रिंसिपल शिवराज ने तेयुप के अध्यक्ष अमित सेठिया, उपाध्यक्ष सचिन चंडालिया, मंत्री अभिनंदन गादिया, टीपीएफ राज्य प्रभारी एवं निवर्तमान अध्यक्ष गौतम बाफना, टीपीएफ प्रभारी जितेंद्र छाजेड़ एवं मुख्य प्रशिक्षक जय चोरड़िया का स्वागत-अभिनंदन किया।

जय चोरड़िया ने बच्चों को जलने पर, गले में कुछ अटक जाने पर, रक्त का बहाव होने पर तथा हड्डी के टूटने पर किस तरह प्राथमिक उपचार देकर स्वयं की, परिवार की या समाज की मदद कैसे कर सकते हैं, वह बहुत शानदार तरीके से सिखाया।

बच्चों ने भी अपनी जिज्ञासाएँ जय चोरड़िया के सामने रखी एवं जिनका उचित समाधान प्रशिक्षक द्वारा दिया गया। तेयुप मंत्री अभिनंदन गादिया ने स्कूल मैनेजमेंट का तथा बच्चों का आभार व्यक्त किया। अंत में स्कूल मैनेजमेंट द्वारा जय चोरड़िया का सम्मान किया गया।

प्रेक्षाध्यान योग शिविर का आयोजन

रोहिणी, दिल्ली।

प्रेक्षाध्यान योग शिविर के प्रारंभ में साध्वी कुंदनरेखा जी ने कहा कि गणाधिपति गुरुदेवश्री तुलसी के निर्देशन, आचार्य महाप्रज्ञ के अध्यात्म की गहराइयों से अनुस्यूत प्रेक्षाध्यान चित्त निर्मलता का महाअभियान है। इससे शारीरिक, मानसिक एवं भावात्मक रोगों का निवारण तो होता ही है, आत्म-अवलोकन का यह दर्पण है, स्वयं की बुराइयों को दूर करने की औषधि है। कायोत्सर्ग, श्वास प्रेक्षा, शरीर प्रेक्षा, लेश्याध्यान और अनुप्रेक्षा के द्वारा आत्मशोधन के साथ-साथ सारे तनावों को दूर किया जा सकता है।

इस अवसर पर साध्वी कुंदनरेखा जी के द्वारा ध्यान के प्रयोग करवाए गए। पंकज ने आसान-यौगिक क्रियाओं एवं प्राणायाम के सघन प्रयोग करवाए। प्रेक्षा ने नमस्कार महामंत्र के प्रयोग एवं कायोत्सर्ग एवं दीर्घश्वास प्रेक्षा के विभिन्न प्रयोगों द्वारा लोगों को अभिभूत कर दिया। इस अवसर पर साध्वी सौभाग्ययशा जी आदि साध्वियाँ उपस्थित रहीं।

कार्यक्रम का प्रारंभ साध्वीश्री जी द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के द्वारा किया गया। रोहिणी सभा के अध्यक्ष विजय जैन ने कहा कि साध्वीश्री जी की प्रेरणा एवं पुरुषार्थ हमें आगे बढ़ा रहा है। इस अवसर पर उन्होंने प्रशिक्षिकाओं का सम्मान किया तथा के०सी० जैन के प्रति आभार प्रदर्शित किया। रतनलाल जैन ने कहा कि ऐसा अनुभव हो रहा है कि अमृत की वर्षा हो रही है।

हेल्थ चेकअप कैंप का आयोजन

पूर्वांचल-कोलकाता।

श्रीभूमि लेक टाउन में एक हेल्थ चेकअप कैंप का आयोजन आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर द्वारा किया गया।

इस शिविर में करीब २०० से ज्यादा लोगों ने भाग लिया, जिसमें फुल बॉडी हेल्थ चेकअप, मधुमेह जाँच, रक्त श्रेणी आदि परीक्षण करवाया। परिषद के एटीडीसी के संयोजक एवं कार्यसमिति सदस्य रोहित धाड़ेवा, नीरज बैंगानी व अन्य सदस्यगण शिविर में उपस्थित थे। शिविर की सफलता में श्रीभूमि विकास मंच के कार्यसमिति सदस्यों का सहयोग रहा।

✦ *भाग्य की चिंता नहीं, सत्पुरुषार्थ करो। भाग्य स्वतः अच्छा हो जाएगा।*

–आचार्यश्री महाश्रमण

तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

भक्तांमर स्तोत्र अनुष्ठान

रोहिणी, दिल्ली।

तेरापंथ भवन में साध्वी डॉ० कुंदनरेखा जी के सान्निध्य में भक्तांमर स्तोत्र अनुष्ठान रखा गया। साध्वी डॉ० कुंदनरेखा जी ने इस अवसर पर कहा कि प्रत्येक अक्षर मंत्र है। उनकी सही संरचना से बिगड़े काम सँवारे जा सकते हैं। भूत-प्रेत आदि उपद्रवों को शांत किया जा सकता है। रोगों का निवारण किया जा सकता है। फिर चाहे भक्तांमर स्तोत्र हो या उपसग्गहर स्तोत्र। भक्तांमर अनुष्ठान का लक्ष्य भी आत्मोत्थान का है, भगवान ऋषभ की स्तुति का है। इस अनुष्ठान से संसार की असारता का अहसास हो, कषाय उपशमन के भाव जगें, राग-द्वेष जैसे विभाओं की बेड़ियाँ ध्वस्त हो और परमानंद की प्राप्ति हो, अपेक्षित है।

साध्वीवृंद द्वारा भक्तांमर स्तोत्र का उच्चारण किया गया। सैकड़ों भाई-बहनों ने इस अनुष्ठान में भाग लेकर परमानंद की अनुभूति की। डॉ० मंजु जैन का कहना है कि इस स्तोत्र के संगान से कैंसर, किडनी, त्वचा के अनेक रोगों को भी ठीक किया जा सकता है।

साध्वी सौभाग्ययशा जी ने कहा कि भगवान आदिनाथ की यह स्तुति अचिंत्य है। जैन धर्म के चौबीस तीर्थंकर परंपरा में भगवान ऋषभ प्रथम हैं। तीर्थंकरों की स्तुति तीर्थंकर बनकर अर्थात् पूर्ण एकाग्रता, पूर्ण भावधारा को जोड़कर की जाए तब ही मनोवांछित प्राप्त किया जा सकता है।

कार्यक्रम का प्रारंभ विजयगीत से युवक परिषद के सदस्यों द्वारा किया गया। तेयुप अध्यक्ष विकास सुराणा ने अपने विचारों की प्रस्तुति दी। इस कार्यक्रम में १०८ जोड़ों सहित विभिन्न सभा-संस्थाओं के पदाधिकारीगण आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन तेयुप के संयोजक शुभम जैन ने किया।

नि:शुल्क लिपिड प्रोफाइल, मधुमेह एवं रक्तचाप परीक्षण शिविर

राजाजीनगर।

तेयुप द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर श्रीरामपुरम् एवं बैंगलोर बृहत महानगर पालिका नागप्पा ब्लॉक वार्ड के संयुक्त तत्त्वावधान में सैकेंड स्टेज राजाजीनगर में स्थानीय लोगों के लिए नि:शुल्क हैल्थ कैंप का आयोजन किया गया। जिसमें रक्तचाप, मधुमेह एवं लिपिड प्रोफाइल (कोलेस्ट्रॉल) जैसी विभिन्न जाँच की गई। बीबीएमपी द्वारा कोविड़ बूस्टर डोज दिया गया। कुल ५१ सदस्यों ने हैल्थ कैंप का लाभ लिया। स्थानीय लोगों को एटीडीसी द्वारा प्रदत्त सेवाओं से अवगत कराया गया।

तेयुप अध्यक्ष अरविंद गन्ना, राजेश पोरवाड़, भरत बाफना, कमलेश गन्ना, सुनील मेहता, कमलेश चोरड़िया एवं राजेश देरासरिया ने अपनी सेवाएँ प्रदान की। इस आयोजन को सफल बनाने में एटीडीसी स्टाफ ज्योति, दिव्या एवं पवन का श्रम नियोजित हुआ।

स्कूल ड्रेस वितरण

राजराजेश्वरी नगर।

तेयुप द्वारा गवर्नमेंट लोअर प्राइमरी स्कूल, पटनागेरे में स्कूल पोशाक वितरण कार्यक्रम का आयोजन हनुमानमल, संजय कुमार, परिवार के सौजन्य से रखा गया। कार्यक्रम की शुरुआत सरस्वती वंदना और स्वागत गीत से की गई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भाजपा वार्ड महासचिव महेश यश तथा वार्ड पार्षद किरण थे। इस अवसर पर उन्होंने तेयुप द्वारा किए गए सेवा कार्य की सराहना की।

इन कार्य में तेयुप अध्यक्ष कौशल लोढ़ा, उपाध्यक्ष विकास छाजेड़, मंत्री विपुल पितलिया, संगठन मंत्री प्रकाश बैद, निवर्तमान अध्यक्ष सुशील भंसाली, सेवा कार्य सहप्रभारी सुपार्श्व पटावरी आदि उपस्थित रहे। अतिथियों का स्वागत विद्यालय की प्रधानाध्यापिका सुगुणा एन० ने किया।

इसी क्रम में राजराजेश्वरी नगर स्थित सांत्वना ओल्ड ऐज होम को जरूरत की सामग्री पहुँचाई गई। यह सेवा कार्य ४ वर्षीय नोवमी पितलिया के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में प्रकाशचंद, विपुल, पितलिया परिवार के सहयोग से किया गया।

शिव शक्ति होम (बौद्धिक रूप से विकलांगों के लिए आवासीय गृह) में निवासित एवं उनकी देखरेख करने वालों के लिए राशन की सामग्री का वितरण किया। इस सेवा कार्य के प्रायोजक पूनमचंद बांठिया की पुण्यतिथि पर कमला देवी बांठिया परिवार थे। कार्यक्रम का शुभारंभ सामूहिक नमस्कार महामंत्र के संगान के साथ किया। परिषद के मंत्री विपुल पितलिया ने उपस्थित प्रायोजक परिवार सहित इस अवसर पर मौजूद सभी सदस्यों का स्वागत किया।

प्रायोजक परिवार से युगल बांठिया ने सेवा कार्य की सराहना की। इस अवसर पर परिषद उपाध्यक्ष विकास छाजेड़, पूर्व अध्यक्ष गुलाब बांठिया, सेवा कार्य सहप्रभारी सुपार्श्व पटावरी, कार्यसमिति सदस्य संतोष बांठिया, सौरभ चोरड़िया एवं बांठिया परिवार के सदस्य उपस्थित थे। सेवा कार्य प्रभारी नरेश बांठिया ने आभार ज्ञापन किया।

घर को स्वर्ग कैसे बनाएँ

मंडिया।

साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में 'घर को स्वर्ग कैसे बनाएँ' कार्यशाला का आयोजन तेयुप द्वारा किया गया।

साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी ने कहा कि हमारे सात वार हैं, लेकिन आठवाँ वार है–परिवार। परिवार चार अक्षर से बना है। पारिवारिक में परस्पर रिश्तों और रिति-रिवाज में विवाद न होकर संवाद होता है वह है परिवार। परिवार का दर्जा बहुत ऊँचा है। परिवार है प्रेम, सौहार्द, प्यार।

साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा कि सामाजिक विकास की धुरी है–परिवार। परिवार एक पवित्र यज्ञ की तरह है, जिसे स्वर्ग युक्त रखने के लिए हर सदस्य को अपनी आहुति देनी होती है।

साध्वी दक्षप्रभा जी ने सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की। हासन से समागत तेममं ने गीतिका प्रस्तुत की। महिला मंडल अध्यक्षा संगीता कोठारी, मंडिया महिला मंडल मंत्री पूनम बोहरा, सभा अध्यक्ष नरेंद्र दक, सभा के मंत्री महावीर भंसाली ने धन्यवाद ज्ञापन किया। हासन महिला मंडल ने गीतिका का संगान किया। अरविंद तातेड़ ने विचार रखे। साध्वी मेरुप्रभा जी ने संयोजन करते हुए विचार रखे। हासन, चामराजनगर, मैसूर आदि क्षेत्रों के लोगों ने दर्शन सेवा का लाभ लिया।

'आरंभ-एक नई दिशा' कार्यशाला

मंडिया।

साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में तेयुप द्वारा 'आरंभ-एक नई दिशा' कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है।

साध्वी गवेषणाश्री जी ने कहा कि तेयुप द्वारा जो कार्यशाला आयोजित की गई है। ऐसी कार्यशालाएँ समाज में होनी चाहिए। यह तो कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग का एक ट्रेनिंग सेशन था, लेकिन सीपीएस की सात दिन की कार्यशाला हो तो तेयुप, कन्या मंडल व समाज को बहुत कुछ सीखने को मिल सकता है। साध्वी मेरुप्रभा जी, साध्वी मयंकप्रभा जी, साध्वी दक्षप्रभा जी ने सीपीएस की प्रेरणा दी। कार्यक्रम की शुरुआत कन्या मंडल ने मंगलाचरण से की।

तेयुप अध्यक्ष प्रवीण दक ने सीपीएस ट्रेनर्स व उपस्थित श्रावक समाज का स्वागत किया। आदित्या मांडोत, हर्षिता जीरावला, सुजल बोहरा, सुनिधि मांडोत के द्वारा सीपीएस क्यों और क्या पर सेशन लिया गया। कार्यक्रम में अच्छी उपस्थिति रही। तेयुप द्वारा ट्रेनर्स का मोमेंटो द्वारा अभिनंदन किया गया। तेयुप मंत्री कमलेश गोखरू ने आभार ज्ञापन किया।

पुरस्कार वितरण समारोह

आमेट।

साध्वी प्रांजलप्रभा जी के सान्निध्य में तेयुप के तत्त्वावधान में चातुर्मास काल में रात्रिकालीन सत्र में आयोजित प्रतियोगिता के पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया।

साध्वीश्री जी के निर्देशन में २४ तीर्थंकर, मस्तिष्क मसाज, आचार्य तुलसी व महाप्रज्ञ जी पर आधारित पुस्तक के नाम व १३ बोल आदि विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में भाग लेकर प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान पर रहने वाले संभागियों को तेयुप द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए।

शिवकुमार, छगनलाल ने सभी प्रतियोगिताओं के पुरस्कार के अर्थ सहयोगी के रूप में अपनी सहमति प्रदान की।

इस अवसर पर तेरापंथ सभा के वरिष्ठ श्रावक शांतिलाल गांधी, धर्मचंद गांधी, मूलचंद बोलिया, गेहरी लाल पितलिया, गोगालाल चौधरी, तेजप्रकाश कोठारी, सभा मंत्री ज्ञानेश्वर मेहता, अरविंद भरसारिया, अशोक पितलिया, तेयुप अध्यक्ष पवन कच्छारा, मंत्री विपुल पितलिया आदि द्वारा पुरस्कार वितरण किए गए। तेयुप परामर्शक अशोक गेलड़ा सहित अनेक पदाधिकारीगण आदि व समस्त श्रावक समाज की उपस्थिति रही।

यूथ अवेकनिंग कार्यक्रम

चेन्नई।

अभातेयुप द्वारा निर्देशित जागो युवा जागो Future Insight 'यूथ अवेकनिंग' का आयोजन तेयुप द्वारा किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के सामूहिक संगान से किया गया। पधारे हुए सभी का स्वागत तेयुप के अध्यक्ष विकास कोठारी ने किया। संदीप भंडारी ने सभी एनजीओ को अपने वक्तव्य में जागरूक होने की प्रेरणा दी।

तेयुप के सहमंत्री दिलीप गेलड़ा ने तेयुप के अनेक आयामों की जानकारी दी। पधारे हुए एनजीओ संस्था के सभी पदाधिकारी ने अपने विचार एवं सुझाव व्यक्त किए।

इस अवसर पर अभातेयुप राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष भरत मरलेचा, तेयुप निवर्तमान अध्यक्ष मुकेश नवलखा, उपाध्यक्ष-प्रथम विशाल सुराणा, कोषाध्यक्ष प्रतीक डागा, संगठन मंत्री सुधीर संचेती, पूर्वाध्यक्ष एवं परामर्शक विकास सेठिया और तेयुप कार्यसमिति सदस्य अनेक संस्थाओं के गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही।

तेयुप मंत्री संदीप मूथा ने सभी का आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन हिमांशु डूंगरवाल एवं ए०वी० नियंत्रण अनीश मरलेचा ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में संयोजक अनिल लुणावत का श्रम रहा।

सेवा कार्य

बारडोली।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा असहाय विद्यार्थियों हेतु स्कूल बैग वितरण सेवा कार्यक्रम किया गया। इसके अंतर्गत सरकारी प्राथमिक विद्यालय बारडोली में लगभग १५० बच्चों को स्कूल बैग वितरण किया गया।

स्कूल के प्रिंसिपल परमार ने इस कार्यक्रम हेतु संपूर्ण समाज के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

कार्यक्रम में तेयुप के अध्यक्ष साहिल बाफना, मंत्री रौनक सरणोत, सहमंत्री संजय बड़ोला, कोषाध्यक्ष पीयूष बाफना आदि गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही।

बाँटने से बढ़ता है ज्ञान

कांटाबाजी।

मुनि प्रशांत कुमार जी के सान्निध्य में तेयुप द्वारा 'कर लो दर्शन भिक्षु के' कार्यक्रम आयोजित हुआ। मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा कि कार्यक्रम हमारे विकास का माध्यम बनता है। व्यक्ति के जीवन में ज्ञान को विकसित करने के लिए ज्ञान प्राप्ति का लक्ष्य होना जरूरी है। जीवन में ज्ञान का बड़ा महत्त्व है।

मुनि कुमुद कुमार जी नए-नए तरीके से कार्यक्रम करवाकर ज्ञान की वृद्धि करते हैं। मीडिया प्रभारी अविनाश जैन ने बताया कि मुनि कुमुद कुमार जी एवं गौरव विमल जैन ने कार्यक्रम का संचालन किया। कार्यक्रम में प्रतिभागियों एवं परिषद को आचार्य भिक्षु के दर्शन का सौभाग्य मिला। तेयुप उपाध्यक्ष दीपक जैन ने कार्यक्रम की भूमिका प्रस्तुत की। तेयुप मंत्री गौरव ने मुनिश्री, प्रायोजक परिवार एवं जनसभा का आभार व्यक्त किया।

✦ *तात्त्विक ज्ञान देना, किसी को चित्तसमाधि पहुँचाना, यह भी सेवा का ही कार्य है।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

राग के समान दुःख नहीं और त्याग के समान कोई सुख नहीं : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, १६ अक्टूबर, २०२२

धर्म सम्राट आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र में बताया गया है कि जीव प्रत्याख्यानी भी है, अप्रत्याख्यानी भी है और प्रत्याख्यानी-अप्रत्याख्यानी भी है।

प्रत्याख्यान शब्द कैसे बना है? व्याकरण की दृष्टि से प्रति+आक्ख्यान से बना है। प्रत्याख्यान का अर्थ है—परित्याग कर देना। सावद्य आचरण से निवृत्त हो जाना। अस्वीकार, निषेध कर देना। यहाँ इस संदर्भ में अर्थ है—सर्व सावद्य योग का परित्याग करना। प्रत्याख्यानी का मतलब है—साधु-महाव्रती बन जाना। सर्व विरत बन जाना।

अप्रत्याख्यान यानी बिलकुल भी त्याग, संयम नहीं है अथवा सम्यक्त्व-युक्त संयम-त्याग नहीं है। जिस व्यक्ति के सर्व सावद्य-योग का त्याग नहीं है, पर थोड़ा-थोड़ा त्याग है, देशविरति है, श्रावक होता है, वह प्रत्याख्यानी-अप्रत्याख्यानी होता है। ये तीन अवस्थाएँ हो जाती हैं। संसार के अधिकांश जीव तो अप्रत्याख्यानी होते हैं।

एकेंद्रिय से लेकर चतुरिन्द्रिय, अमनस्क पंचेन्द्रिय मनुष्य, सारे के सारे देव और नैरियक सारे अप्रत्याख्यानी होते है। संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय इनमें अप्रत्याख्यानी तो होते हैं, पर कुछ प्रत्याख्यान प्रत्याख्यानी भी हो सकते हैं। इनमें श्रावकत्व आ सकता है। त्याग व अनशन स्वीकार कर सकते हैं। मनुष्य तो तीनों प्रकार के हो सकते हैं। जीवन में त्याग का महत्त्व है।

राग के समान कोई दुःख नहीं होता है और त्याग के समान कोई सुख नहीं होता है। धनतेरस, चतुर्दशी और दीपावली को तेले की तपस्या कर सकते हैं। आतिशबाजी में भी संयम रखा जा सकता है। धर्म की दृष्टि से तो दीपावली पर तप-त्याग, संयम करें। 'लोगुत्तमे समणे नाय पुत्ते।' का जाप किया जा सकता है। 'महावीर स्वामी केवलज्ञानी, गौतम स्वामी चऊनाणी' का भी जप किया जा सकता हैं रात्रि को बारह बजे बाद 'महावीर पाये निर्वाण, गौतम को हुआ केवलज्ञान' का जप किया जा सकता है।

त्याग के प्रसंग में पूज्यप्रवर ने राम-भरत के प्रसंग को विस्तार से समझाया। आचार्य तुलसी ने भी अपने रहते अपने युवाचार्य को आचार्य बना दिया था। पर आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने भी उनका सम्मान करते हुए गणाधिपति पद पर प्रतिस्थापित कर दिया था। अणुव्रत भी एक त्याग है, संयम है। हम जीवन में प्रत्याख्यान का जितना प्रयास व पुष्ट कर सकें, यह काम्य है।

कल से पूज्य कालू अभिवंदना सप्ताह शुरू हो रहा है। पूज्यप्रवर ने फरमाया कि कल से हम पूज्य कालूगणी की अभिवंदना करें।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि सकारात्मक सोच व नकारात्मक सोच हमारे ग्रंथि तंत्र को प्रभावित करती है। हमें ध्यान देना है कि हम अपने चिंतन को किस दिशा में प्रवाहित कर रहे हैं। हमारा चिंतन सकारात्मक हो। इससे हमारे 'व्हाइट ब्लड सेल्स' का विकास होता है। इम्युनिटी पॉवर बढ़ता है। सकारात्मक सोच वाला व्यक्ति हमेशा गुणात्मक दर्शन करता है।

टीपीएफ के नवमनोनीत राष्ट्रीय अध्यक्ष के मनोनयन पर पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया कि टीपीएफ अपना धार्मिक-आध्यात्मिक विकास करती रहे। अपनी बुद्धिमत्ता का अच्छा उपयोग करते रहें। बहुत अच्छी संस्था समाज की है। शपथ समारोह से पूर्व पूज्यप्रवर ने मंगलपाठ सुनाया। तपस्या के प्रत्याख्यान भी करवाए।

नवनिर्वाचित अध्यक्ष पंकज ओस्तवाल ने अपनी टीम की घोषणा की। पूज्यप्रवर ने नव निर्वाचित टीम को मंगलपाठ व आशीर्वचन फरमाया। अध्यक्ष पंकज ओस्तवाल ने अपनी भावना श्रीचरणों में अभिव्यक्त करते हुए भावी योजनाओं की घोषणा की। पूर्व महामंत्री हिम्मत मांडोत ने बेस्ट शाखा पुरस्कार की घोषणा की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

कालूगणी की निस्पृहता और दायित्व बोध संपूर्ण संघ के लिए प्रेरणादायी : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, १८ अक्टूबर, २०२२

कालूगणी अभिवंदना सप्ताह का दूसरा दिन। आज का दिन परमपूज्य कालू और पूज्य माणकगणी व अंतरिम काल विषय पर आधारित है। तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमण जी ने भगवती सूत्र आगम की विवेचना करते हुए फरमाया कि एक प्रश्न किया गया है कि भंते! जीव जीव है या जीव जीव है। एक जीव शब्द का अर्थ है—आत्मा। दूसरे जीव शब्द का अर्थ है—चैतन्य।

जीव चैतन्य है अथवा चैतन्य जीव है। जीव का गुण है—चैतन्य। उत्तर दिया गया गौतम! जीव नियमतः चैतन्य है और चैतन्य भी नियमतः जीव है। यह गुण और गुणी की बात है। जीव गुणी है, चैतन्य गुण है, इसलिए दोनों को अलग नहीं किया जा सकता। दोनों का अविनाभावी संबंध है।

प्रश्न किया गया, क्या जीव नैश्यिक है या नैश्यिक जीव है। उत्तर दिया गया कि नैश्यिक तो जीव है, पर जीव नैश्यिक हो भी अथवा न भी हो। जीव अमूर्त होता है। वह आँखों का विषय नहीं है। शरीर से जीव निकल सकता है, पर जीव से चैतन्य नहीं निकल सकता। आगमवेत्ता केवलज्ञानी होते हैं। आचार्य तीर्थंकर के प्रतिनिधि के रूप में प्रतिष्ठित होते हैं।

परमपूज्य कालूगणी के जीवन को अनेक खंडों में विभक्त करके देखा जा सकता है। उनके जीवन का तीसरा खंड माणकगणी और अंतरिम काल मान सकते हैं। तीन आचार्यों के काल में वे मुनि के रूप में रहे। मघवागणी कालू के दीक्षा प्रदाता थे तो डालगणी कालू के उत्तराधिकार प्रदाता थे। माणकगणी कालूगणी के अवसर प्रदाता थे।

माणकगणी के महाप्रयाण और डालगणी के नियुक्ति काल के बीच का समय अंतरिम काल है। हमारे धर्मसंघ के लिए वह अवांछनीय सा काल है। ऐसा दिन धर्मसंघ को कभी देखना न पड़े। उस अंतरित काल में मुनि कालू छापर को कार्य करने का मौका मिला। वे युवावस्था के संत थे। उनका नाम भी उस समय आचार्य पद के लिए आया था पर उन्होंने उस समय अपने आपको उस दायित्व के लिए फिट नहीं माना था।

उस अंतरिम काल में गुरुकुल में १४ संत थे। मुनि भीम जी रत्नाधिक संत थे। आज्ञा-आलोयणा का दायित्व तो वे संभालते थे पर व्यवस्था पक्ष को संभालना महत्त्वपूर्ण होता है। मुनि कालू ने वो दायित्व, जिम्मेदारी और निस्पृहता से संभाला था। इससे शिक्षा ली जा सकती है कि हममें पद लिप्सा न आए। लालसा, लोलुपता न हो। साधु संस्था में प्रतिज्ञा ली जाती है कि पद का उम्मीदवार नहीं बनूँगा।

उस विकट परिस्थिति में धर्मसंघ को संभालना भी सेवा का कार्य हो जाता है। मुनि कालूजी रेलमगरा जो बड़े थे, उदयपुर से लाडनूं पहुँचे और उन्होंने संकट मोचक सा दायित्व निभाया था। उन्होंने भी निस्पृहता दिखलाई थी और डालगणी के नाम की घोषणा उस रात्रिकालीन संतों की मीटिंग में की थी। अंतरिम काल पूरा हो गया।

हमारे धर्मसंघ की परंपरा-मर्यादा कालूजी स्वामी रेलमगरा को संबल देने वाले रहे होंगे। जिसके आधार पर ही उन्होंने भावी आचार्य की घोषणा की थी। इस अभिवंदना सप्ताह के अंतर्गत कालूगणी के विभिन्न प्रसंगों पर प्रकाश डाला जा रहा है। हम उनको सार-संक्षेप में जानने का प्रयास कर सकते हैं।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने इस प्रसंग पर कहा कि पूज्य माणकगणी ने जब शासन की डोर संभाली थी वो युग परिवर्तन का युग था। मुनि कालू मघवागणी की तरह ही माणकगणी को सम्मान देते थे। वे प्रमाणिक और कर्तव्यनिष्ठ शिष्य की तरह रहते थे। उनकी विनयशीलता और अध्ययनशीलता से माणकगणी बहुत प्रसन्न थे। माणकगणी भावी व्यवस्था किए बिना ही महाप्रयाण कर गए, यह भी एक तरह का अच्छेरा जैसा ही है कि संघ अनाथ हो गया था। पर भैक्षव शासन एकता का एक उदाहरण बना और संघ सनाथ हो गया।

मुनि राजकुमार जी ने भावपूर्ण गीतिका प्रस्तुत की। समणी निर्मलप्रज्ञा जी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। महिला मंडल अध्यक्षा सरिता सुराणा, महिला मंडल द्वारा गीत व प्रवक्ता उपासक इंद्रराज नाहटा ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की। पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने करते हुए कहा कि हमें ग्रहण किए हुए व्रतों के प्रति आस्था रहे, उन्हें खंडित करने का प्रयास न हो।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
24 - 30 अक्टूबर, 2022

✦ *सामने वाले व्यक्ति की बात पर भी ध्यान दो। उसमें भी कोई हित व कल्याण का तथ्य प्राप्त हो सकता है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

टीपीएफ के १५वें वार्षिक अधिवेशन 'चरैवेति—चरैवेति' का आयोजन

बुद्धिजीवी अपनी सलाह से कर सकते हैं दूसरों की समस्या का समाधानः आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, १५ अक्टूबर, २०२२

अध्यात्म जगत के महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने भगवती सूत्र की व्याख्या करते हुए फरमाया कि प्रश्न किया गया—भंते! कर्म प्रकृतियाँ कितनी हैं? उत्तर दिया गया—गौतम! आठ कर्म प्रकृतियाँ प्रज्ञप्त हैं। जैसे ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, देवनीय, मोहनीय, आयुष्य नाम, गौत्र और अंतराय।

अध्यात्म जगत में आत्मवाद अत्यंत महत्त्वपूर्ण सिद्धांत है। आत्मवाद नहीं है तो फिर अध्यात्मवाद का कोई अस्तित्व नहीं है। अध्यात्मवाद का प्राण तत्त्व और केंद्रीय तत्त्व आत्मवाद होता है। जैन दर्शन और जैन धर्म में आत्मा पर अच्छा प्रकाश डाला गया है।

आत्मवाद से जुड़ा हुआ ही दूसरा सिद्धांत है—कर्मवाद। जीव जैसा कर्म करता है, उसको वैसा फल मिलता है। आत्मवाद और कर्मवाद पर अध्यात्म का दर्शन टिका हुआ है। ये दो बड़े स्तंभ हैं। कर्मवाद के सिद्धांत पर वर्तमान जीवन की भी व्याख्या की जा सकती है। आत्मवाद, कर्मवाद न हो तो फिर पुनर्जन्म हो ही नहीं सकता। आत्मा और कर्म को कोई अच्छी तरह समझ ले तो आत्मा की सही दिशा में गति हो सकती है।

तत्त्व की दृष्टि से नौ तत्त्व, आत्मवाद, कर्मवाद को समझने से सम्यक् दृष्टिकोण और आंशिक पुष्टि को प्राप्त हो जाए। जैन दर्शन में कर्मवाद पर विवेचन अनेक जगह प्राप्त होता है। भगवती सूत्र बहुत बड़ा आगम है। यह प्रश्नोत्तर के क्रम से संवाद शैली में तत्त्व-बोध दिया गया है। आठ कर्मों के आधार पर आदमी के जीवन का विश्लेषण कर सकते हैं।

एक आदमी विशेष बौद्धिक क्षमता वाला है, तो एक मंदबुद्धि वाला है, इसका अंतर है—ज्ञानावरणीय कर्म। ज्ञानावरणीय कर्म का उदय है, तो आदमी की बुद्धि विकसित नहीं होती। वेदनीय कर्म के क्षयोपशम से स्वास्थ्य अनुकूलता रहती है और उदय से स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता है। गुस्सा आता है तो मोहनीय कर्म का उदय है। कषाय मंद है, तो मोहनीय कर्म का क्षयोपशम है। इस तरह आठ कर्मों के आधार पर हम व्यक्ति का विश्लेषण कर सकते हैं।

जैसी करनी वैसी भरनी, सुख-दुःख स्वयं मिलेगा। कर्मवाद को समझकर हम यह चिंतन करें कि मैं पाप कर्म के बंधन से कैसे बचूँ? कर्म पुण्य रूप में भी होते हैं और पाप रूप में भी होते हैं। इन आठ कर्मों में चार तो एकांत पाप हैं। शेष चार में पुण्य-पाप दोनों होते हैं। हम पाप कर्म से बचकर अच्छा जीवन जीएँ, यह काम्य है।

टीपीएफ का १५वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन पूज्यप्रवर की सन्निधि में आज से आयोजित होने जा रहा है। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया कि हम मनुष्य हैं। मनुष्य होना अपने आपमें उपलब्धि हो सकती है। जो विकास करते-करते सिद्ध-मुक्त हो सकता है। हम अपने जीवन में भी आरोहण करने का प्रयास करें। सक्रियता से पुरुषार्थ करते रहो, विकास के लिए प्रयास आवश्यक है।

अच्छे क्षेत्र में अच्छे लक्ष्य के साथ पुरुषार्थ किया जाता है, तो कुछ हासिल किया जा सकता है। भाग्यवाद भी एक सिद्धांत है, परंतु भाग्य भरोसे बैठे रह जाना यह एक प्रकार का आलसीपन होता है। अवांछनीय रूप में आलस्य में मत रहो, पराक्रम करो। सम्यक् पुरुषार्थ हो, सही दिशा में गति हो। गलत काम करने की अपेक्षा आलसी रहना अच्छा है।

टीपीएफ यह एक बुद्धिजीवियों का संगठन है, बुद्धिजीवी अपने ज्ञान से अच्छी सलाह, अच्छा पथ-दर्शन देकर समस्या का समाधान कर सकता है। इसलिए मैं बुद्धि को बहुत महत्त्व देता हूँ। बुद्धि वही अच्छी है, जो जिन धर्म का सेवन करती है। इन वर्षों में बौद्धिकता का विकास भी हुआ है। यह संगठन अपनी बौद्धिकता का सदुपयोग करता रहे। धार्मिक आध्यात्मिक सेवा में अपनी शक्ति का नियोजन करता रहे। बुद्धिमान व्यक्ति धार्मिक बात को भी अच्छी तरह पकड़ सकता है। जैन दर्शन, मनन और मीमांसा का गहराई से अध्ययन हो। अपने-अपने पेशे में नैतिकता रहे। व्यवसाय में ईमानदारी रहे। यह संस्था सेवादायी रूप में सामने आई है। अपने-अपने क्षेत्र में सेवा देते रहें, आगे बढ़ते रहें। आप सब श्रावक-श्राविकाएँ हैं, वर्धमान बने रहें।

टीपीएफ के राष्ट्रीय अध्यक्ष नवीन पारख ने बताया कि टीपीएफ के पाँच उद्देश्य हैं, जिन्हें हम SHINE कहते हैं। इसकी सदस्य संख्या व शाखाएँ बढ़ रही हैं। टीपीएफ महामंत्री हिम्मत मांडोत ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

टीपीएफ के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि रजनीश कुमार जी ने बताया कि तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम अनेक रत्नों की माला है। ये संस्था आगे बढ़ती जा रही है। यह एक प्रबुद्ध वर्ग की संस्था है।

टीपीएफ गौरव-२०२१ के लिए आईआरएस नरेश सालेचा के नाम की घोषणा की गई। मुख्य न्यासी ने नरेश सालेचा का परिचय दिया। नरेश सालेचा को टीपीएफ गौरव-२०२१ अलंकरण का मोमेंटो प्रदान किया गया। नरेश सालेचा ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की। टीपीएफ के नव मनोनीत राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में पंकज ओस्तवाल भीलवाड़ा का मनोनयन हुआ।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**